UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023

शिशु मन्दिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष - 40 | अंक - 03 | युगाब्द - 5125 | विक्रम संवत् - 2080 | नवम्बर - 2023

मूल्यः 12

शुभ दिपावली

सर्व दुःख हरे देवि महालक्ष्मि नमोस्तुते।।

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-405302
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
ईमेल :
umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिंटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्रा।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

स्वास्थ्य एवं सानंद

स्वास्थ्य ही धन है। कहा जाता है कि, **"अगर धन चला जाए तो कुछ नहीं जाता परन्तु यदि स्वास्थ्य ठीक न हो तो सब कुछ खत्म हो जाता है।"** स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। शरीर से कमजोर मनुष्य कई प्रकार के कार्य के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें अपनी दिनचर्या सही करनी चाहिए। हमें संतुलित भोजन करना चाहिए। फल, दूध, दही और हरी सब्जियों का सेवन करना चाहिए। सुबह की सैर करना शरीर को चुस्त रखता है। व्यायाम करना शरीर को कई प्रकार की बीमारियों से बचाता है। शरीर के ठीक होने पर कार्य करने का, पढ़ने का भी मन करता है। आलस्य दूर रहता है। स्वस्थ बच्चे पढ़ाई में सदा आगे रहते हैं। ऐसे बच्चे काम से जी नहीं चुराते हैं। अच्छा स्वास्थ्य भगवान का दिया हुआ धन है। जिसकी देखभाल करना हमारा धर्म है। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि जितनी भूख हो उससे थोड़ा कम भोजन करें। अधिक खाने से मोटापा बढ़ता है। आँखों को ठीक रखने के लिए हमें टी.वी. कम से कम तीन गज की दूरी से देखना चाहिए। पढ़ते समय कमरे में रोशनी ठीक होनी चाहिए। आँखों की नियमित जाँच करनी चाहिए। बच्चों को जंक फूड न देकर संतुलित आहार देना चाहिए। किसी ने ठीक ही कहा है–

"पहला सुख निरोगी काया"

अपनी बात

कहते हैं मन भावनाओं और प्रवृत्तियों का घर है और यह समस्त जीवधारियों में समान रूप से विद्यमान है। पशुओं में भी मन होता है। जब भी वे संसार के सम्पर्क में आते हैं तब उनके मन में भावनाओं का आयेग उत्पन्न होता है जिसकी सहज अभिव्यक्ति सीधे–सीधे उनकी क्रियाओं को होती है। जैसे यदि हम किसी फुले की पूँछ खीचें तो उसे क्रोध उत्पन्न होगा और उसकी अभिव्यक्ति वह भौंक कर प्रकट करता है। कुले के पास यह समझने की क्षमता नहीं होती कि वह कुछ विचार करे जैसे जो उसके मन में वृत्ति उत्पन्न हुई बस उसी के तहत यह कार्य कर बैठता है। परन्तु हम मनुष्यों में मन में उठने वाली भावनाओं का विश्लेषण और निरीक्षण करने की क्षमता है, हम उन क्षणिक प्रवृत्तियों और भावनाओं में वह जाने की अपेक्षा अपनी विवेक शक्ति का प्रयोग कर कार्य को सही दिशा दे सकते हैं। क्या शुभ है क्या अशुभ है, क्या करना चाहिए, क्या नहीं, यह विवेक करने की क्षमता और निर्णय लेने की शक्ति के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूल्यांकन होता है। प्रत्येक मनुष्य में सद्भावनाएं और दुर्भावनाएं दोनों होती हैं। सद्भावनाएं जहाँ व्यक्ति को ऊँचाई की और ले जाती हैं यहाँ दुर्भावनाएं उसे पतन के गर्त की ओर। इन्हीं सद्भावनाओं और दुर्भावनाओं को गीता में देवी और आसुरी सम्पदा के नाम से कहा गया है। अभय अन्तःकरण की शुद्धता परमात्मा के स्वरूप में स्थित रहना सात्विक दान, इन्द्रियों का दमन, गुरुजनों की पूजा, स्वाध्याय, तप, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति, दया, अलोलुपता, वाणी और व्यवहार में मृदुता, क्षमा, धैर्य किसी से शत्रुभाव न रखना तथा अहंकार अभिमान का अभाव आदि देवी सम्पदा युक्त पुरुष के लक्षण हैं। इसके विपरीत दम्भ, घमण्ड, अभिमान, क्रोध, कठोरता और अज्ञान, आदि आसुरी सम्पदा से युक्त पुरुष के लक्षण है।

दैवी सम्पदा अर्थात सदभावना हमें संसार बन्धन से मुक्त करने वाली और आसुरी सम्पदा अर्थात दुर्भावना संसार बन्धन में फंसने वाली है। अतः दुर्भावनाओं का परित्याग कर सद्भावनाओं का हमें आश्रय लेना चाहिए। आज का हमारा जीवन अतीत के कर्मों से प्रभावित होता है। वह अतीत जो बीत चुका है जिस पर आज हमारा कोई नियन्त्रण नहीं है। पर वर्तमान तो शत–प्रतिशत हमारे हाथ में है। हम चाहे तो अपने वर्तमान फर्मों को अपने प्रयत्नों, शिक्षा या पुरुषार्य से बदल लें। ईश्वर ने अच्छे–बुरे कर्म चयन करने की स्वतन्त्रता हर व्यक्ति को दी है। एक नए भविष्य को निर्मित कर आगे बढ़ने की क्षमता और सुअवसर दोनों हर व्यक्ति को प्राप्त हैं।

वर्तमान की अवहेलना कर कोई सफलता प्राप्त नहीं कर सका है सभी महापुरुषों की सफलता का रहस्य यही है कि वे अपने सब कार्य विचारपूर्वक करते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले हम आचार्य, प्रधानाचार्य अथवा विद्यार्थी जिस भी रूप में है हमें निरन्तर विचार करना है ज्ञानार्जन करते हुए हम किस तरह स्वयं तथा दूसरों के लिए हितकारी हो सकते हैं ? कैसे दूसरों के जीवन में आनन्द की ज्योति विखेर सकते हैं ? ''तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतंगमय'' परमात्मा से यह प्रार्थना करें कि हे प्रभु हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो अर्थात हमारे मनों के अंदर जो मनोमालिन्य, अंधकार भरा है उसे दूर कर जीवन ज्योतिर्मय कर दो और अमरता की ओर हमें ले चलो। दीपावली के पर्व पर लोगों के मनों में जीवन में छाये अन्धकार को मिटाकर रोशनी कर दो। इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ यह अंक आपको समर्पित है।

सनातन धर्म के षोडश संस्कार

विजय श्री
प्रधानाचार्य

सनातन हिन्दू धर्म एक शाश्वत और प्राचीन धर्म है। यह एक वैज्ञानिक और विज्ञान आधारित धर्म होने के कारण निरन्तर विकसित रहा। माना जाता है कि इसकी स्थापना ऋषि और मुनियों ने की है। इसका मूल पूर्णतः वैज्ञानिक होने के कारण सदियाँ बीत जाने पर भी इसका महत्व कम नहीं हुआ। हिन्दू धर्म के ये सोलह संस्कार इसकी जड़ है। इन्ही संस्कारों में संस्कृति एवं परम्पराएं निहित है जो निम्नवत है –

1. गर्भाधान संस्कार-गर्भाधान संस्कार के माध्यम से हिन्दू संदेश देता है कि स्त्री–पुरुष संबंध पशुवत न होकर केवल वंश वृद्धि के लिए होना चाहिए। मानसिक तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ होने, मन प्रसन्न होने पर गर्भाधान करने से संतति स्वस्थ और बुद्धिमान होती है। विशेष तिथि एवं ग्रहों की गणना के आधार पर ही गर्भाधान करना उचित माना गया है।

2. पुंसवन संस्कार-पुंसवन संस्कार एक हष्ट–पुष्ट बालक के लिये किया जाने वाला संस्कार है। शास्त्रों के अनुसार चार महीने तक गर्भ का लिंग यह गर्भस्त जीव बनता हैं वही पुंसवन संस्कार है। चार महीने तक गर्भ का लिंग भेद नहीं होता। इसलिये लड़का या लड़की चिन्ह के उत्तपत्ति के पूर्व ही इस संस्कार को किया जाता है।

3. सीमन्तोन्नयन-सीमान्तोन्नयन हिन्दू धर्म में तृतीय संस्कार है। इसका शाब्दिक अर्थ है ''सीमान्त'' अर्थात केश और ''उन्नयन'' अर्थात ऊपर उठाना। संस्कार विधि के समय पति अपनी पत्नी के केशों को सवारते हुये उनके केशों को ऊपर उठाता है। इस लिये इस संस्कार का नाम सीमान्तोन्नयन संस्कार है।

4. जातकर्म संस्कार-यह संस्कार बालक के जन्म के बाद किया जाता है। इस संस्कार में बालक को शहद और घी चढ़ाया जाता है। इसमें बालक की बुद्धि का विकास तीव्र होता है। इस संस्कार को करने के बाद ही माता बालक को स्तनपान कराना शुरू करती है बालक के लिए माता का दूध ही श्रेष्ठ भोजन है।

5. नामकरण संस्कार-भारतीय संस्कृति में नामकरण संस्कार का बहुत अधिक महत्व है। जन्म नक्षत्र को ध्यान में रखते हुय शुभ नक्षत्र में बालक को नाम दिया जाता है। नाम वर्ग की शुभता का प्रभाव बालक पर सम्पूर्ण जीवन रहता है।

6. निष्क्रमण संस्कार-निष्क्रमण संस्कार में बालक को सूर्य, चन्द्र ज्योति के दर्शन कराये जाते है। जन्म के चौथे माह में यह संस्कार किया जाता है। इस दिन से बालक को बाहरी वातावरण के सम्पर्क में लाया जाता है। शिशु को आस–पास के वातावरण से अवगत कराया जाता है।

7. अन्नप्राशन संस्कार-इस अन्नप्राशन संस्कार के बाद से बालक को माता के दूध के अतिरिक्त अन्न खाद्य पदार्थ देने शुरू किये जाते हैं। चिकित्सा विज्ञान भी यहीं कहता है कि एक समय सीमा के बाद बालक का पोषण केवल दूध नहीं हो सकता। उसे अन्य पदार्थों की भी जरूरत होती

है। इस संस्कार का उद्देश्य खाद्य पदार्थों से बालक का शारीरिक और मानसिक विकास करना है। यही इसकी वैज्ञानिकता है।

8. चुड़ाकर्म संस्कार - भारतीय संस्कृति में इस संस्कार का बड़ा महत्व है। इसे मुण्डन संस्कार के नाम से भी जाना जाता है। इसके लिये शिशु के जन्म के बाद के पहले, तीसरे और पाँचवे वर्ष का चयन किया जाता है। शारीरिक स्वच्छता और बौद्धिक विकास इस संस्कार का उद्देश्य है। माता के गर्भ में रहने के समय और जन्म के बाद पूषित कीटाणुओं से मुक्त करने के लिये यह संस्कार किया जाता है। स्वच्छता से शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास शिशु में तीव्र गति से होता है।

9. विद्यारम्भ संस्कार-विद्यारम्भ का अभिप्रायः बालक को शिक्षा के प्रारम्भिक स्वर से परिचित कराना है। प्राचीन काल में जब गुरूकुल की परम्परा थी तो बालक को वेदाध्ययन के लिये भेजने से पहले घर पर अक्षर बोध कराया जाता था। माँ–पिता तथा गुरुजन पहले उसे मौखिक रूप से श्लोक पौराणिक कथाओं का अभ्यास करा दिया करते थे। ताकि गुरुकुल में कठिनाई न हो हमारा शास्त्र विद्यानुरागी है। विद्याज्ञान ही मनुष्य की अध्यात्मिक उन्नति का साधन है।

10. कर्णवेधन संस्कार-हमारी संस्कृति की परम्परा अनुसार इस संस्कार का आधार बिल्कुल वैज्ञानिक है। बालक की शारीरिक व्याधि से रक्षा ही इसका मूल उद्देश्य है। प्रकृति प्रदत्त इस शरीर के सारे अंग महत्वपूर्ण है। कान हमारे श्रवण द्वार है। कर्ण वेद्यन से व्याधियां दूर होती है तथा श्रवण शक्ति भी बढ़ती है।

11. उपनयन संस्कार -इस संस्कार को यज्ञोपवीत संस्कार भी कहते है। बच्चे की अध्यात्मिक उन्नति के लिये यह संस्कार किया जाता है। इस संस्कार में बालक को जनेऊ धारण कराया जाता है।

12. वेदारम्भ-ज्ञानार्जन से सम्बन्धित यह संस्कार है वेदारम्भ संस्कार के माध्यम से वैदिक ज्ञान को अपने अन्दर समाविष्ट करना है। इसके लिए योग्य आचार्यो के पास गुरु कुलों में भेजा जाता था। वेदारम्भ से पहले आचार्य अपने शिष्य को ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने एवं संयमित जीवन जीने की प्रतिज्ञा कराते थे तथा उसकी परीक्षा के बाद वेदाध्ययन कराते थे।

13.केशान्त संस्कार-गुरुकुल में वेदाध्ययन पूर्ण कर लेने पर आचार्य के समक्ष यह संस्कार सम्पन्न किया जाता था। वस्तुतः यह संस्कार गुरूकुल से विदाई लेने तथा गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का उपक्रम है। ब्रह्मचारी के समावर्तन संस्कार के पूर्व बालों की सफाई की जाती है। स्नान कराकर स्नातक की उपाधि दी जाती थी। यह संस्कार भी शुभमुहूर्त में किया जाता था।

14. समावर्तन संस्कार-वेदास्नान या समावर्तन संस्कार विद्याध्ययन का अन्तिम संस्कार है। विद्याध्ययन पूर्ण हो जाने के बाद बालक स्नातक ब्रह्मचारी अपने पूज्य गुरु की आज्ञा पाकर अपने घर लौटता है। इस लिये उसे समावर्तन संस्कार कहा जाता है। गृहस्थ जीवन में प्रवेश पाने का अधिकारी हो जाना समावर्तन संस्कार का फल है। वेद मंत्रों से अभिमन्त्रित जल से भरे हुये 8 कलशों से विधि पूर्वक ब्रह्मचारी को स्नान कराया जाता है। इसलिये ये वेदस्नान संस्कार भी कहलाता है।

15.विवाह संस्कार-विवाह संस्कार अपने बाद अपनी पीढ़ी का अंश इस दुनिया को दिये

जाने का मार्ग है। परिपक्व आयु में विवाह संस्कार प्राचीन काल से मान्य रहा है। सामाजिक बन्धनों में बांधने और बच्चों को विवाह संस्कार करके एक अदृश्य डोर में बांध दिया जाना है।

16. अन्त्येष्टि संस्कार-जब मनुष्य का शरीर इस संसार के कर्म करने योग्य नहीं रह जाता है मन की उमंग भी समाप्त हो जाती है तब इस शरीर का जीव उड़ जाता है। पंचतत्वों से बने इस नश्वर शरीर के दाह संस्कार का विधान है। यही अन्त्येष्ठि संस्कार कहलाता है।

पिता जी

घर की चार दीवार में पूरा जहान होता है दोस्तो।
माँ जमीन होती है पिता आसमान होता है दोस्तो।।
पिता अमीर हो या हो गरीब
अपने बच्चों के लिए बादशाह होता है।
नींद अपनी भुलाकर सुलाया हमको,
आंसू अपनी गिराकर हंसाया हमको।
दर्द कभी ना देना उस भगवान की तस्वीर को,
जमाना माँ–बाप कहता है जिनको।
अगर मैं रास्ता भटक जाऊ,
तो मुझे फिर राह दिखाना।
आपकी जरूरत मुझे हर कदम पर होगी।
लगे चोट मुझे तो रखना ख्याल गिरने लगे रास्ते में
तो लेना संभाल जानती हूँ,
आपकी आँखों में है कुछ सपने।
कुछ परिवार के लिए तो कुछ है अपने..... पूरा
करूंगी हर ख्वाब बस इतना है आपसे कहना
पिताजी बस आप
हमेशा साथ रहना...?

वैदिक राष्ट्रगीत

भारतवर्ष हमारा प्यारा अखिल विश्व से न्यारा।
सब साधन से रहे समुन्नत, भगवन देश हमारा।।

हों ब्राह्मण विद्वान राष्ट्र में, ब्रह्म तेज व्रत धारी,
महारथी हों शूर धनुर्धर, क्षत्रिय लक्ष्य प्रहारी ।।
गौएँ भी अति मधुर दुग्ध की, रहें बहाती धारा ।
सब साधन से रहे समुन्नत .....।

भारत में बलवान वृषभ हों, बोझ उठायें भारी,
अश्व आशुगामी हों दुर्गम, पथ में विचरण कारी।
जिनकी गति अवलोक लजाकर, हो समीर भी हारा।
सब साधन से रहे समुन्नत .....।

महिलाएँ हों सती सुन्दरी, सद्गुणवती सयानी,
रथारूढ़ वीरों के सुत हों, शूर सुकृत अवतारी।
जो होंगे इस धन्य राष्ट्र का भावी सुदृढ़ सहारा।
सब साधन से रहे समुन्नत.....।

समय–समय पर आवश्यकता, वश रस घन बरसायें।
अन्नौषध में लगें प्रचुर फल, और स्वयं पक जायें।
योग हमारा क्षेम हमारा स्वतः सिद्ध हो सारा।
सब साधन से रहे समुन्नत भगवन देश हमारा।।

किं सरलं किञ्च कठिनम्

उपदेशं सरलं तस्य अनुकरणं कठिनम्।
व्ययकरणं सरलं धनार्जनं कठिनमम्।
शत्रुः सरलः मित्रनिर्माणं कठिनम्।
वचनदानं सरलं पालनम् कठिनम्।
अमूल्य–विक्रयं सरलं अर्थाहरणम् कठिनम्।
प्रचारं सरलं आचारं कठिनम्।
नेता सरलः नेतृत्व कठिनम्।
ज्ञानं सरलं ध्यानं कठिनम्।
मन्त्रज्ञानं सरलं जपकरणं कठिनम्।

शैक्षिक उन्नयन

जुगल किशोर मिश्र
प्रधानाचार्य
गंगापुरी प्रयागराज

नास्ति विद्यासमो बन्धुर्नास्ति विद्यासमः सुहृत् ।
नास्ति विद्यासमं वित्तं नास्ति विद्यासमं सुखम्।।

विद्या जैसा कोई बन्धु नहीं है, इस जगत में विद्या जैसा मित्र नहीं है। विद्या के समान कोई धन नहीं है और विद्या के समांतर संसार में कोई सुख नहीं है।

समाज का विकास सर्वदा शैक्षिक गुणवत्ता से प्रदर्शित होता है। समाज के विकास में शिक्षा का विशेष योगदान है। इसी कारण समय–समय पर शैक्षिक गुणवत्ता वृद्धि हेतु नवीन प्रयोग होते रहते हैं। शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व और उसकी क्षमताओं को विकसित करने वाली सतत प्रक्रिया है। जो व्यक्ति को संस्कारित एवं जिम्मेदार नागरिक बनाने के कौशल को विकसित करती है। मनुष्य प्रतिक्षण नए–नए अनुभव प्राप्त करता है व दूसरों को भी करवाता है जो उसके दिन प्रतिदिन के व्यवहार को प्रभावित करता है। यही सीखने की प्रक्रिया समाज के लोगों, समूहों, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, दूरदर्शन व सोशल मीडिया आदि से भी अनौपचारिक रूप से संपन्न होती रहती है। यही सीखने की प्रक्रिया शैक्षिक उन्नयन में विशिष्ट रूप से सहयोगी होती है।

वर्तमान परिवेश में शैक्षिक स्तर वर्षानुवर्ष बदलता जा रहा है साथ ही संसाधन भी बढ़ रहे हैं जिसके कारण आज व्यक्ति के पास ज्ञान के अनगिनत स्रोत हैं। इसमें नवाचार की संभावना बहुत है परन्तु शैक्षिक वृद्धि के साथ–साथ मानसिक और शारीरिक विकास भी समुचित दिशा में होना चाहिए। एक अच्छा नागरिक बनने के लिए हमारा चिंतन भारतीय दर्शन एवं भारतीय परिवेश के अनुसार होना चाहिए। हमारा देश ध्रुव, प्रहलाद, शिवा, राणा, चंद्रगुप्त, सीता, सावित्री, गार्गी, मैत्रेयी आदि के आदर्शों पर चलने वाला बने। इस हेतु शिक्षा का विकास करते समय प्रमुख रूप से मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा हो जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। यह गुण उसको अपने घर परिवार और समाज से अपनी मातृभाषा में प्राप्त होता है अतः विद्यालय में भी मातृभाषा प्रभावी रूप से लागू होनी चाहिए। जिससे बालक में अपने मातृभाषा व मातृभूमि के प्रति आदर का भाव जागृत हो सके।

इसी क्रम में आवश्यकता है कि शिक्षा में मानसिक आनन्द की अनुभूति हो न की मानसिक दबाव या कुंठा। इस हेतु विद्यालय स्तर पर खेल–खेल में शिक्षा प्रौद्योगिकी एवं व्यवहारिक लाभ देने का प्रयास करना चाहिए। छात्रों को बाजार भ्रमण, स्थानीय विशेषता वाले स्थान का दर्शन, खेतों का भ्रमण आदि कराना उपयुक्त होगा। इससे रोजमर्रा की चीजों का ज्ञान आनन्द के साथ हो पाएगा। रिश्तों की पहचान एवं महत्व का ज्ञान होगा। यह ज्ञान उसको अपने अतीत के गौरव की भी अनुभूति कराएगा।

हम केवल किताबी ज्ञान से एक नागरिक को कुशल नहीं बना सकते बल्कि उसकी योग्यता एवं रुचि को जानकर व्यावसायिक अभिरुचि के अनुसार उसकी शैक्षिक और कौशलात्मक विकास की तकनीक विकसि करना होगा तभी उसका विकास संभव हो सकेगा। अध्ययन करते समय ही हमें सर्वांगीण विकास के क्रम में अपने देश, समाज, अपने

शेष भाग पृष्ठ 10 पर

मेघनाद का वध केवल लक्ष्मण ही कर सकते थे ?

लंका के युद्ध के कुछ वर्षों बाद एक बार अगस्त्य मुनि अयोध्या आए। श्रीराम ने उनकी अभ्यर्थना की और आसन दिया। राजसभा में श्रीराम अपने भ्राता भरत, शत्रुघ्न और देवी सीता के साथ उपस्थित थे। बात करते–करते लंका युद्ध का प्रसंग आया। भरत ने बताया कि उनके भ्राता श्रीराम ने कैसे रावण और कुंभकर्ण जैसे प्रचंड वीरों का वध किया और लक्ष्मण ने भी इंद्रजीत और अतिकाय जैसे शक्तिशाली असुरों को मारा।

अगस्त्य मुनि बोले–"हे भरत रावण और कुंभकर्ण निःसंदेह प्रचंड वीर थे, किन्तु इन सबसे बड़ा वीर तो मेघनाद ही था। उसने अंतरिक्ष में स्थित होकर इंद्र से युद्ध किया था और उन्हें पराजित कर लंका ले आया था। तब स्वयं ब्रह्मा ने इंद्रजीत से दान के रूप में इंद्र को मांगा तब जाकर इंद्र मुक्त हुए थे। लक्ष्मण ने उसका वध किया इसलिए वे सबसे बड़े योद्धा हुए। और ये भी सत्य है कि इस पूरे संसार में मेघनाद को लक्ष्मण के अतिरिक्त कोई और मार भी नहीं सकता था, यहाँ तक कि स्वयं श्रीराम भी नहीं।" भरत को बड़ा आश्चर्य हुआ लेकिन भाई की वीरता की प्रशंसा से वह खुश थे।"

उन्होंने श्रीराम से पूछा कि क्या ये बात सत्य है और जब राम ने इसकी पुष्टि की तो भी भरत के मन में जिज्ञासा पैदा हुई कि आखिर अगस्त्य मुनि ऐसा क्यों कह रहे हैं कि इंद्रजीत का वध रावण से ज्यादा मुश्किल था? उन्होंने पूछा "हे महर्षि! अगर आप और भैया ऐसा कह रहे हैं तो ये बात अवश्य ही सत्य होगी और मुझे इस बात की प्रसन्नता भी है कि मेरा भाई विश्व का सर्वश्रेष्ठ योद्धा है किन्तु फिर भी मैं जानना चाहता हूँ कि आखिर ऐसा क्या रहस्य है कि मेघनाद को लक्ष्मण के अतिरिक्त कोई और नहीं मार सकता था?"

अगस्त्य मुनि ने कहा "हे भरत मेघनाद ही विश्व का एकलौता ऐसा योद्धा था जिसके पास विश्व के समस्त दिव्यास्त्र थे। उसके पास तीनों महास्त्र ब्रम्हा का ब्रम्हास्त्र, नारायण का नारायणास्त्र एवं महादेव का पाशुपतास्त्र भी था और उसे ये वरदान था कि उसके रथ पर रहते हुए कोई उसे परास्त नहीं कर सकता था इसी कारण वो अजेय था। उस समय संसार में केवल वही एक योद्धा था जिसने अतिमहारथी योद्धा का स्तर प्राप्त किया था।

ये सत्य है कि उसके सामान योद्धा वास्तव में कोई और नहीं था। उसने स्वयं भगवान रूद्र से युद्ध की शिक्षा ली और समस्त दिव्यास्त्र प्राप्त किये। भगवान रूद्र स्वयं ही उसे रावण से भी महान योद्धा बताया था और उसकी शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात कहा था कि वो एक सम्पूर्ण योद्धा बन चुका है और इस संसार में तो उसे कोई और परास्त नहीं कर सकता। उन्होंने यहाँ तक कहा कि उन्हें संदेह है कि स्वयं वीरभद्र भी मेघनाद को परास्त कर सके। इसके अतिरिक्त उसकी परम पवित्र पत्नी सुलोचना का सतीत्व भी उसकी रक्षा करता था।"

इसपर भरत ने कहा "हे महर्षि! आपके मुख से मेघनाद की शक्ति का ऐसा वर्णन सुनकर विश्वास हो गया कि वो वास्तव में महान योद्धा था किन्तु बात अगर केवल दिव्यास्त्र की है तो श्रीराम के पास भी सारे दिव्यास्त्र थे। उन्होंने भी त्रिदेवों के महास्त्र प्राप्त किये। साथ ही साथ महाबली हनुमान को भी ये

वरदान था कि उनपर किसी भी अस्त्र–शस्त्र का प्रभाव नहीं होगा और उनके बल और पराक्रम का कहना ही क्या?

लक्ष्मण निःसंदेह महा–प्रचंड योद्धा थे और उनके पास भी विश्व के सारे दिव्यास्त्र थे किन्तु उसे पाशुपतास्त्र का ज्ञान नहीं था जिसका ज्ञान मेघनाद को था। फिर भी लक्ष्मण किस प्रकार मेघनाद का वध करने में सफल हुए। और आप ऐसा क्यों कह रहे हैं कि केवल लक्ष्मण ही उसका वध कर सकते थे?"

इस पर अगस्त्य मुनि ने कहा "आपका कथन सत्य है। जितने दिव्यास्त्र मेघनाद के पास थे उतने लक्ष्मण के पास नहीं थे किन्तु इंद्रजीत को ये वरदान था कि उसका वध वही कर सकता था जिसने :

चौदह वर्षों तक ब्रम्हचर्य का पालन किया हो।
चौदह वर्षों तक जो सोया ना हो।
चौदह वर्षों तक जिसने भोजन ना किया हो।
चौदह वर्षों तक किसी स्त्री का मुख ना देखा हो।

पूरे विश्व में केवल लक्ष्मण ही ऐसे थे जिन्होंने मेघनाद के वरदान की इन शर्तों को पूरा किया था इसी कारण केवल वही मेघनाद का वध कर सकते थे।"

तब श्रीराम बोले "हे गुरुदेव ! मेघनाद और लक्ष्मण दोनों के बल और पराक्रम से मैं अवगत हूँ। अगर शक्ति की बात की जाये तो निःसंदेह इन दोनों की कोई तुलना नहीं थी। लक्ष्मण के ब्रम्हचारी होने की बात मैं समझ सकता हूँ किन्तु मैं वनवास काल में चौदह वर्षों तक नियमित रूप से लक्ष्मण के हिस्से का फल–फूल उसे देता रहा। मैं सीता के साथ एक कुटी में रहता था और बगल की कुटी में लक्ष्मण थे।

मैं, सीता और लक्ष्मण अधिकतर समय साथ ही रहते थे फिर भी उसने सीता का मुख भी न देखा हो, भोजन ना किया हो और चौदह वर्षों तक सोए न हों, ऐसा कैसे संभव है?" अगस्त्य मुनि सारी बात समझ कर मुस्कुराए। वे समझ गए कि श्रीराम क्या चाहते हैं। दरअसल सभी लोग सिर्फ श्रीराम का गुणगान करते थे लेकिन वे चाहते थे कि लक्ष्मण के तप और वीरता की चर्चा भी अयोध्या के घर–घर में हो तभी ऐसा पूछ रहे हैं।

उन्होंने कहा कि "क्यों ना स्वयं लक्ष्मण से इस विषय में पूछा जाये।" लक्ष्मण को बुलाया गया। सभा में आने पर उन्होंने सबको प्रणाम किया फिर श्रीराम ने कहा "प्रिय भाई! तुमसे जो भी पूछा जाये उसका सत्य उत्तर दो। हम तीनों चौदह वर्षों तक साथ रहे फिर तुमने सीता का मुख कैसे नहीं देखा? फल दिए गए फिर भी अनाहारी कैसे रहे? और 14 वर्ष तक कैसे सोए नहीं?

लक्ष्मण ने कहा "भैया! जब हम भाभी को तलाशते ऋष्यमूक पर्वत गए तो सुग्रीव ने हमें उनके आभूषण दिखा कर पहचानने को कहा तो आपको स्मरण होगा कि मैं तो सिवाए उनके पैरों के नुपूर के कोई आभूषण नहीं पहचान पाया था, क्योंकि मैंने कभी भी उनके चरणों के ऊपर देखा ही नहीं था। मैं तो भाभी को केवल उनके चरणों से पहचानता हूँ। उनके अतिरिक्त मैंने वनवास के समय शूर्पणखा एवं बालि की भार्या देवी तारा को ही देखा था किन्तु एक तो वे अनायास ही मेरे समक्ष आ गयी थी और दूसरे वे दोनों पूर्ण मनुष्य नहीं थी । शूर्पणखा राक्षसी थी और तारा वानर जाति की।"

"रही बात निद्रा की तो जब आप और माता एक कुटिया में सोते थे, मैं रात भर बाहर धनुष पर बाण चढ़ाए पहरेदारी में खड़ा रहता था। निद्रा ने मेरी आंखों पर कब्जा करने का प्रयास किया तो मैंने निद्रा को अपने बाणों से बेध दिया था। तब निद्रा देवी ने हार कर स्वीकार करते हुए मुझे वचन दिया कि वह चौदह वर्ष तक मुझे स्पर्श नहीं करेगी किन्तु जब आपका अयोध्या में राज्याभिषेक हो रहा होगा तब वो

मुझे घेरेगी।

आपको याद होगा, राज्याभिषेक के समय जब मैं आपके पीछे छत्र लेकर खड़ा था तब निद्रा के कारण मेरे हाथ से छत्र गिर गया था। निद्रा देवी को दिया वचन के कारण ही मैं आपका राजतिलक भी नहीं देख सका था क्यूंकि मैं सो गया था।"

अब निराहारी रहने की बात भी सुनिए। मैं जो फल–फूल लाता था, माता उसके तीन भाग करती थीं। आप सदैव एक भाग मुझे देकर कहते थे लक्ष्मण फल रख लो। आपने कभी फल खाने को नहीं कहा फिर बिना आपकी आज्ञा के मैं उसे खाता कैसे? मैंने उन्हें संभाल कर रख दिया। सभी फल उसी कुटिया में अभी भी रखे होंगे। गुरु विश्वामित्र से मैंने एक अतिरिक्त विद्या का ज्ञान लिया था बिना आहार किए जीने की विद्या। उसके प्रयोग से मैं चौदह साल तक अपनी भूख को नियंत्रित कर सका।"

श्रीराम ने आश्चर्य में पड़ते हुए कहा तो क्या सारे वनवास काल के फल वही हैं?" तब लक्ष्मण ने कहा "नहीं भैया, उनमें सात दिन के फल कम होंगे।" तब श्रीराम ने कहा "इसका अर्थ है कि तुमने सात दिन तो आहार लिया था?" इसपर लक्ष्मण ने कहा "भैया सात दिन के फल कम इस कारण है क्योंकि उन सात दिनों में फल आए ही नहीं।"

जिस दिन हमें पिताश्री के स्वर्गवासी होने की सूचना मिली, हम निराहारी रहें। जिस दिन रावण ने माता का हरण किया उस दिन फल लाने कौन जाता? जिस दिन समुद्र की साधना कर आप निराहारी रह उससे राह मांग रहे थे। जिस दिन हम इंद्रजीत के नागपाश में बंधकर दिनभर अचेत रहे। जिस दिन इंद्रजीत ने मायावी सीता का शीश काटा था और हम शोक में रहें। जिस दिन रावण ने मुझे शक्ति मारी और मैं पूरा दिन मरणासन्न रहा। जिस दिन आपने रावण वध किया उस दिन हमें भोजन की सुध कहां थी।

लक्ष्मण के जीवन का ऐसा त्याग और सत्चरित्र देख कर वहाँ उपस्थित सभी लोग साधु–साधु कह उठे। भरत ने भरे कंठ से कहा "तुम धन्य हो लक्ष्मण वास्तव में ऐसा कठिन तप केवल तुम्ही कर सकते थे और केवल तुम्ही इंद्रजीत का वध करने के योग्य थे।

कदाचित इसी कारण मुझे या शत्रुघ्न को भैया के साथ वन जाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ क्यूंकि ऐसा संयम केवल तुम्हारे लिए ही संभव है।" श्रीराम ने गदगद होकर लक्ष्मण को अपने गले से लगा लिया और कहा "प्रिय लक्ष्मण वास्तव में तुम जैसा भाई मिलना कठिन ही नहीं बल्कि असंभव है।

तुम्हारा ये आत्म–नियंत्रण किसी तपस्या से कम नहीं। तुम्हारे इसी तपस्या के कारण हम रावण को पराजित करने में सफल हो पाए। वास्तव में तुम्ही इस विश्व के सर्वश्रेष्ठ योद्धा हो। जब तक ये विश्व रहेगा, तुम्हारी सत्चरित्रता सबका मार्गदर्शन करती रहेगी।

पृष्ठ 07 का शेष भाग

पूर्वजों के प्रति गौरव का भान करना तथा अपने जीवन में राष्ट्र को प्राथमि देकर व्यक्तिगत कार्य को गुणवत्तापूर्ण करते हुए अपने जीवन को व्यवस्थित करना ही शैक्षिक उन्नति का आधार होना चाहिए। निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि जिस मनुष्य में अपनी मातृभाषा, संस्कृति व संस्कार के प्रति विश्वास व आस्था होगा उसके लिए कोई भी कार्य असाध्य नहीं होगा। अंततः हम यह कह सकते हैं कि –

विद्या वितर्को विज्ञानं स्मृतिः तत्परता क्रिया ।
यस्यैते षड्गुणास्तस्य नासाध्यमति वर्तते ।।

अर्थात्–(विद्या, तर्कशक्ति, विज्ञान, स्मृतिशक्ति, तत्परता और कार्यशीलता ये छः गुण जिसके पास हैं उसके लिए कुछ भी असाध्य नहीं है।)

गुरू नानक

गुरू नानक देव या नानक देव सिखों के प्रथम गुरू थे। गुरु नानक देवजी का प्रकाश (जन्म 15 अप्रैल 1469 ई. (वैशाख सुदी 3, संवत् 1526 विक्रमी) में तलवंडी रायभोय नामक स्थान पर हुआ। सुविधा की दृष्टि से गुरु नानक का प्रकाश उत्सव कार्तिक पूर्णिमा को मनाया जाता है। तलवंडी अब ननकाना साहिब के नाम से जाना जाता है। तलवंडी पाकिस्तान के लाहौर जिले से 30 मील दक्षिण–पश्चिम में स्थित है।

धार्मिक कट्टरता के वातावरण में उदित गुरु नानक (Guru Nanak) ने धर्म को उदारता की एक नई परिभाषा दी। उन्होंने अपने सिध्दान्तों के प्रसार हेतु एक संन्यासी की तरह घर का त्याग कर दिया और लोगों को सत्य और प्रेम का पाठ पढ़ाना आरंभ कर दिया। उन्होंने जगह–जगह घूमकर तत्कालीन अंधविश्वासों, पाखन्डों आदि का जमकर विरोध किया।

वे हिन्दू–मुस्लिम एकता के भारी समर्थक थे। धार्मिक सद्भाव की स्थापना के लिए उन्होंने सभी तीर्थों की यात्रायें की और सभी धर्मों के लोगों को अपना शिष्य बनाया। उन्होंने हिन्दू धर्म और इस्लाम, दोनों की मूल एवं सर्वोत्तम शिक्षाओं को सम्मिश्रित करके एक नए धर्म की स्थापना की जिसके मिलाधर थे प्रेम और समानता। यही बाद में सिख धर्म कहलाया। भारत में अपने ज्ञान की ज्योति जलाने के बाद उन्होंने मक्का मदीना की यात्रा की और वहां के निवासी भी उनसे अत्यंत प्रभावित हुए। 25 वर्ष के भ्रमण के पश्चात् नानक कर्तारपुर में बस गये और वहीं रहकर उपदेश देने लगे। उनकी वाणी आज भी 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संगृहीत है।

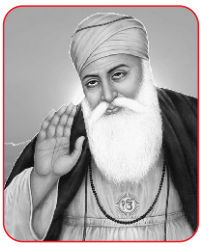

जिन–जिन स्थानों से गुरु नानक गुजरे थे वे आज तीर्थ स्थल का रूप ले चुके हैं। अंत में 1539 में 'जपूजी' का पाठ करते हुये उनका स्वर्ग प्रयाण हुआ।

विवाह सन 1485 ई. में नानक का विवाह बटाला निवासी, मूला की कन्या सुलक्खनी से हुआ। उनके वैवाहिक जीवन के सम्बन्ध में बहुत कम जानकारी है। 28 वर्ष की अवस्था में उनके बड़े पुत्र श्रीचन्द का जन्म हुआ। 31 वर्ष की अवस्था में उनके द्वितीय पुत्र लक्ष्मीदास अथवा लक्ष्मीचन्द उत्पन्न हुए। गुरु नानक के पिता ने उन्हें कृषि, व्यापार आदि में लगाना चाहा किन्तु उनके सारे प्रयास निष्फल सिद्ध हुए। घोड़े के व्यापार के निमित्त दिये हुए रुपयों को गुरु नानक ने साधुसेवा में लगा दिया और अपने पिताजी से कहा कि यही सच्चा व्यापार है। नवम्बर, सन् 1504 ई. में उनके बहनोई जयराम (उनकी बड़ी बहिन नानकी के पति) ने गुरु नानक को अपने पास सुल्तानपुर बुला लिया। नवम्बर, 1504 ई. से अक्टूबर 1507 ई. तक वे सुल्तानपुर में ही रहें अपने बहनोई जयराम के प्रयास से वे सुल्तानपुर के गवर्नर दौलत ख़ाँ के यहाँ मादी रख लिये गये। उन्होंने अपना कार्य अत्यन्त ईमानदारी से पूरा किया। वहाँ की जनता तथा वहाँ के शासक दौलत ख़ाँ नानक के कार्य से बहुत सन्तुष्ट हुए। वे अपनी आय का अधिकांश भाग ग़रीबों और साधुओं को दे देते थे। कभी–कभी वे पूरी रात परमात्मा के भजन में व्यतीत कर देते थे।

मरदाना तलवण्डी से आकर यहीं गुरु नानक का सेवक बन गया था और अन्त तक उनके साथ रहा। गुरु नानक देव अपने पद गाते थे और मरदाना रवाब बजाता था। गुरु नानक नित्य प्रातः बेई नदी में स्नान करने जाया करते थे।

आध्यात्मिक पुकार और निस्वार्थ सेवा

रायबुल्लर ने सबसे पहले गुरु नानक की दिव्यता को समझा और उससे खुश होकर नानक को पाठशाला में रखा। नानक के गुरु उसकी आध्यात्मिक काव्य रचनाओ को सुनकर चकित रह गये जब नानक को हिन्दू धर्म के पवित्र जनेऊ समारोह से गुजरने की बारी आयी तो उन्होंने उसमे भाग लेने से मना कर दिया। उन्होंने कहा कि उनका जनेऊ दया, संतोष, संयम से बंधा और सत्य का बुना होगा जो ना जल सकेगा ना मिटटी में मिल सकेगा, ना खो पायेगा और ना कभी घिसेगा। गुरु नानक ने इसके बाद जाति प्रथा का विरोध किया और मूर्ति पूजा में भाग लेने से भी मना कर दिया।

नानक देव के पिता कालू ने सोचा कि उनके पुत्र के आध्यात्मिक तरीके उसको लापरवाह बना रहे है तो उन्होंने नानक को व्यापार के धंधे में लगा दिया। नानक के व्यापारी बनकर कमाई के फायदे से भूखो को भोजन खिलाना शुरू कर दिया तभी से लंगर का इतिहास शुरू हुआ था। इससे पहले जब पहली बार नानक को व्यापार के लिए उनके पिता ने भेजा तो उनको 20 रूपये देकर इन पैसो से फायदा कमाने को कहा–रास्ते में उनको साधुओ और गरीब लोगो का समूह मिला तो उन्होंने उन पैसो से उनके लिए भोजन और कपड़ो की व्यवस्था की। नानक जब घर खाली हाथ लौटे तो उनके पिता ने उनको सजा दी। पहली बार Guru Nanak गुरु नानक देव ने निस्वार्थ सेवा को असली लाभ बताया। इसी वजह से लंगर के मूलभूत सिद्धान्तों का उद्‌गम हुआ।

दस सिद्धांत

गुरूनानक देव जी ने अपने अनुयायियों को जीवन के दस सिद्धांत दिए थे। यह सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है

1. ईश्वर एक है।
2. सदैव एक ही ईश्वर की उपासना करो।
3. जगत का कर्ता सब जगह और सब प्राणी मात्र में मौजूद है।
4. सर्वशक्तिमान ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं रहता।
5. ईमानदारी से मेहनत करके उदरपूर्ति करना चाहिए।
6. बुरा कार्य करने के बारे में न सोचें और न किसी को सताएँ।
7. सदा प्रसन्न रहना चाहिए। ईश्वर से सदा अपने को क्षमाशीलता माँगना चाहिए।
8. मेहनत और ईमानदारी से कमाई करके उसमें से जरूरतमंद को भी कुछ देना चाहिए।
9. सभी स्त्री और पुरुष बराबर हैं।
10. भोजन शरीर को जिंदा रखने के लिए जरूरी है पर लोभ–लालच व संग्रहवृत्ति बुरी है।

1. प्रमुख गुरू द्वारा साहिब–गुरुद्वारा कंध साहिब–बटाला (गुरुदासपुर) –

गुरु नानक का यहाँ पत्नी सुलक्षणा से 18 वर्ष की आयु में संवत् 1544 की 24वीं जेठ को विवाह हुआ था। यहाँ गुरु नानक की विवाह वर्षगाँठ पर प्रतिवर्ष उत्सव का आयो जन होता है।

2. गुरूद्वारा हाट साहिब

सुल्तानपुर लोधी (कपूरथला) गुरुनानक ने बहनोई जैराम के माध्यम से सुल्तानपुर के नवाब के यहाँ शाही भंडार के देखरेख की नौकरी प्रारंभ की। वे यहाँ पर मोदी बना दिए गए। नवाब युवा नानक से काफी प्रभा वित थे। यहीं से नानक को 'तेरा' शब्द के माध्यम से अपनी मंजिल का आभास हुआ था।

शेष भाग पेज 19 पर

हमारा उत्सव

उमाशंकर मिश्र

दिवाली का इतिहास : दिवाली, जिसे दीपावली के नाम से भी जाना जाता है, सबसे महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से मनाए जाने वाले हिंदू त्योहारों में से एक है। यह पांच दिवसीय त्योहार है जो आमतौर पर अक्टूबर और नवंबर के बीच आता है, जो अंधेरे पर प्रकाश की जीत और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है।

दिवाली का इतिहास प्राचीन हिंदू पौराणिक कथाओं में निहित है और इसके साथ कई महत्वपूर्ण किंवदंतियां जुड़ी हुई हैं। सबसे प्रमुख और व्यापक रूप से जानी जाने वाली कहानियों में से एक भगवान राम के वनवास और राक्षस राजा रावण पर विजय के बाद अयोध्या लौटने की है। महाकाव्य रामायण के अनुसार, भगवान राम, उनकी पत्नी सीता और उनके भाई लक्ष्मण ने जंगलों में 14 साल का वनवास बिताया था। अपना वनवास पूरा करने के बाद, वे कार्तिक मास की अमावस्या के दिन अयोध्या लौट आए। अपने प्यारे राजकुमार का स्वागत और सम्मान करने के लिए, अयोध्या के लोगों ने पूरे शहर को तेल के दीयों से रोशन किया और अपार खुशी और खुशी के साथ मनाया। दीपक जलाने की यह परंपरा अंधकार पर प्रकाश की और बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है।

दीवाली कई कहानियों और किंवदंतियों से जुड़ी हुई है जिनका गहरा सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व है।

रामायण : महाकाव्य रामायण भगवान राम, उनकी पत्नी सीता और उनके भक्त हनुमान की कहानी कहता है। रामायण की प्रमुख घटनाओं में से एक भगवान राम, सीता और लक्ष्मण की 14 साल के वनवास के बाद अयोध्या वापसी है। उनकी वापसी का जश्न मनाने और राक्षस राजा रावण पर भगवान राम की जीत का सम्मान करने के लिए, अयोध्या के लोगों ने दीये (तेल के दीपक) जलाए और पूरे शहर को सजाया। भगवान राम की घर वापसी के उपलक्ष्य में दीवाली के दौरान इस परंपरा का अभी भी पालन किया जाता है।

भगवान कृष्ण और नरकासुर की कथा: इस कथा के अनुसार, राक्षस राजा नरकासुर दुनिया के लिए खतरा बन गया था। भगवान कृष्ण ने अपनी पत्नी सत्यभामा के साथ, नरकासुर के खिलाफ एक भयंकर युद्ध लड़ा और अंततः उसे हरा दिया, जिससे लोगों को उसके अत्याचार से मुक्ति मिली। नरकासुर की हार का दिन नरक चतुर्दशी या छोटी दिवाली के रूप में मनाया जाता है, जो दिवाली के मुख्य दिन से पहले होता है। यह बुराई पर अच्छाई की जीत और धार्मिकता के महत्व का प्रतीक है।

राजा बलि की कहानी राजा बलि एक उदार और सदाचारी शासक थे, लेकिन उनकी महत्वाकांक्षाओं ने देवताओं को डरा दिया। भगवान विष्णु ने एक बौने ब्राह्मण वामन का रूप धारण किया और वरदान के लिए राजा बलि के पास पहुंचे। बलि ने वामन के अनुरोध को स्वीकार कर लिया, जो बाद में एक विशाल रूप में विकसित हुए और पूरे ब्रह्मांड को केवल तीन चरणों में कवर किया। बदले में, भगवान विष्णु ने राजा बलि को वर्ष में एक बार अपने राज्य का भ्रमण करने का वरदान दिया। इस यात्रा को ओणम के रूप में केरल राज्य में दीवाली के त्योहार के रूप में मनाया जाता है।

देवी लक्ष्मी की कहानी: धन और समृद्धि

की देवी, देवी लक्ष्मी, दिवाली समारोह में एक केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। ऐसा माना जाता है कि दिवाली की रात देवी लक्ष्मी घरों में आती हैं और उन्हें धन और प्रचुरता का आशीर्वाद देती हैं। लोग अपने घरों की सफाई करते हैं, दीपक जलाते हैं और उनका आशीर्वाद लेने के लिए प्रार्थना करते हैं। कहानी समृद्धि और कल्याण के लिए देवी लक्ष्मी का आशीर्वाद लेने के महत्व पर जोर देती है।

दिवाली का महत्व : यह त्योहार धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण होता है। इसे प्रकाश के त्योहार के रूप में भी जाना जाता है, जो अंधकार और अज्ञानता को हराकर प्रकाश और ज्ञान की जीत को दर्शाता है।

धार्मिक महत्व : दिवाली का प्रमुख धार्मिक महत्व है देवी लक्ष्मी की पूजा का लक्ष्मी धन, समृद्धि और धर्म की प्रतीक हैं। लोग इस दिन उनकी कृपा, आशीर्वाद और धन के लिए प्रार्थना करते हैं। दीपावली के दिन घर को दीपों की रौशनी से ज्योतिर्मय बनाने का उद्देश्य लक्ष्मी माता के आगमन का अभिप्रेत करना होता है।

सांस्कृतिक महत्व : दिवाली में भारतीय संस्कृति और परंपराओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस अवसर पर लोग अपने घरों को सजाकर रंगों और दीपों से सजाते हैं। रंगोली और दीपों की रौशनी से न केवल घर की सुंदरता में वृद्धि होती है, बल्कि इससे संगठन और सामूहिक एकता की भावना भी प्रकट होती है। इस त्योहार में परिवारों और मित्रों के साथ समय बिताना, स्नेह और प्रेम को बढ़ाने का एक अच्छा मौका होता है। यह भारतीय समाज में एकता, बंधुत्व और सद्भाव की भावना को स्थापित करता है।

सामाजिक महत्व : दिवाली एक सामाजिक त्योहार है जो लोगों को एक–दूसरे के साथ जोड़ता है और उन्हें भाउकता के साथ एकत्र करता है। लोग मिठाई और उपहार बांटते हैं, एक दूसरे के साथ मिलकर खाते–पीते आनंद लेते हैं, और सामूहिक रूप से प्रदर्शन और मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इसे एक खुशहाल और उत्साहभरा माहौल के रूप में मनाने का एक अवसर माना जाता है, जिससे सामाजिक बंधन मजबूत होते हैं और समुदाय में खुशहाली की भावना प्रबल होती है।

दीवाली कैसे मनाते हैं : दीपावली को बहुत ही धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया जाता है। इसे पांच दिनों तक मनाने का अद्वितीय तरीका है, जिसमें हर दिन का अपना महत्वपूर्ण रूप होता है।

धनतेरस : दीपावली का उत्सव धनतेरस के साथ शुरू होता है। इस दिन लोग अपने घरों की सजावट करते हैं और धन और समृद्धि की प्राप्ति के लिए देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं। धनतेरस के दिन लोग नए वस्त्रों को पहनते हैं और खरीदारी करते हैं। छोटी दीवाली (नरक चतुर्दशी): छोटी दीवाली नरक चतुर्दशी के रूप में जानी जाती है, जब भगवान कृष्ण ने दानवराज नरकासुर का वध किया था। इस दिन लोग दीपों की पूजा करते हैं और अंधकार और अज्ञानता को दूर करते हैं। आमतौर पर रंगोली बनाई जाती है और घर की सजावट की जाती है।

दीपावली : दीपावली का मुख्य दिन होता है, जिसे अमावस्या के दिन मनाया जाता है। इस दिन घर के बाहर और अंदर दीपकों की रौशनी से जगमगाता है। लोग घर को सजाते हैं, दिवाली के लिए खास मिठाई और पकवान बनाते हैं और अपने परिवार और दोस्तों के साथ खुशियां मनाते हैं। आमतौर पर पटाखे जलाए जाते हैं और अन्य मनोरंजन कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

गोवर्धन पूजा : दीपावली के चौथे दिन गोवर्धन पूजा मनाई जाती है। इस दिन गोवर्धन पर्वत की पूजा की जाती है, जो भगवान कृष्ण ने बचाया था। लोग अन्न, फल और प्रसाद की पूजा करते हैं

और गोवर्धन पर्वत के चारों ओर प्रदर्शन करते हैं।

भैया दूज : दीपावली के अंतिम दिन भैया दूज मनाया जाता है, जिसे भाई–बहन का त्योहार कहा जाता है। इस दिन बहन अपने भाई कोतिलक लगाकर वरदान देती है। यह त्योहार भाई–बहन के प्यार और सम्मान को दर्शाता है।

दीवाली की परंपराएं और रीति-रिवाज :

रीति–रिवाज दीपावली के त्योहार को सामूहिक रूप से मनाने के लिए प्रचलित हैं। हालांकि, यह विभिन्न क्षेत्रों और समाजों में थोड़ी भिन्नता भी रखते हैं, लेकिन सभी की भावना और उद्देश्य एक ही होते हैं–सुख, समृद्धि और सद्भाव की कामना करना और प्रकाश के प्रतीक के रूप में जगमगाहट लाना।

घर की सजावट : दीपावली के पहले ही दिन से लोग अपने घरों की सजावट करने की शुरुआत करते हैं। घर को सजाने के लिए रंगोली बनाई जाती है, दीपक जलाए जाते हैं और घर के आंगन में तोरण लगाया जाता है।

पटाखों का जलाना : दीपावली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा पटाखों का जलाना है। लोग अलग–अलग प्रकार के पटाखे जलाते हैं और आसमान में रंगीन आभास और आनंद का माहौल बनाते हैं।

मिठाई बांटना : दीपावली का त्योहार उपहारों और मिठाइयों को बांटने का भी एक आदत है अपन परिवार, दोस्तों और पड़ोसियों को उपहार देते हैं और साथ ही मिठाईयाँ खिलाते हैं। इससे एक दूसरे के साथ प्यार और समर्पण का भाव बना रहता है।

सामाजिक मेल-जोल : दीपावली के अवसर पर लोग समाजिक मेल–जोल का आनन्द लेते हैं। परिवारों, दोस्तों और पड़ोसियों के बीच मिलने–मिलाने का अवसर बनता है और एक–दूसरे के साथ खुशी, मिठास और प्यार बांटते है।

असाधारण दृढ़ता

किशोरावस्था में भी नरेन्द्रनाथ के प्रत्येक कार्य में उनकी बुद्धि का परिचय मिलता है। एक बार मेट्रोपालिटिन ! इंस्टीटयूशन में पढ़ते समय नरेन्द्र को ये पता चला कि एक पुराने माननीय शिक्षक काम से अवकाश ग्रहण कर रहे हैं। अतएव कुछ उत्साही मित्रों के साथ मिलकर विदाई का अभिनंदन करने के लिये तैयारी करने लगे।

यह निश्चय हुआ कि आगामी पुरस्कार वितरण सभा में वे शिक्षक महोदय का अभिनंदन करेंगे। देशविख्यात सुवक्ता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी इस सभा का नेतृत्व कर रहे थे। उनके सामने खड़े होकर भाषण देने के बारे में सभी विद्यार्थी संकोच कर रहे थे। आखिर अंत में सभी के अनुरोध पर नरेन्द्र नाथ भाषण देने को तैयार हो गये।

नरेन्द्र ने सभामंच पर बड़े होकर आधे घंटे तक अपने स्वाभाविक सुमधुर कण्ठ से अंग्रेजी में शिक्षक महोदय के गुणों का वर्णन किया। प्रख्यात वक्ता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने हार्दिक संतोष प्रकट करते हुए नरेन्द्र के भाषण की अत्यधिक प्रशंसा की। सुविख्यात वक्ता सुरेन्द्र नाथ जी के सामने भाषण देना बालक नरेन्द्र नाथ की असाधारण दृढ़ता एवं आत्मनिर्भरता का परिचायक थी।

'विश्व में अधिकांश लोग इसलिये असफल हो जाते हैं, कि उनमें समय पर साहस का संचार नहीं हो पाता और वे भयभीत हो उठते हैं। उपरोक्त प्रसंग स्वामी जी की शिक्षा को सत्यापित करता है। उनकी सभी शिक्षाएँ, उनके अपने अनुभव एवं जीवन में किये कार्यों का विवरण आज भी एक जीवंत उदाहरण है। राज भी एक जीवंत उदाहरण है।

।। अंतिम उपदेश ।।

महाभारत का प्रसंग है। भीष्म पितामह बाणो की सैया पर लेटे हुए थे। वह धीरे–धीरे निस्तेज होते जा रहे थे। मनचाही मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे। तभी भगवान श्री कृष्ण युधिष्ठिर आदि को लेकर वहाँ पहुँचे। भीष्म पितामह ने श्री कृष्ण को भाव विभोर होते देखा और उनकी स्तुति की। श्री कृष्ण ने पितामह से कहाँ कि कृपया युधिष्ठिर को सामान्य धर्म और राजधर्म की व्याख्या, करके समझाइये। आपके उपदेशो की इन्हें बहुत आवश्यकता है भीष्म पितामह ने तब श्री कृष्ण और उपस्थित ऋषि मुनियों को प्रणाम करके कहा–संसार में हमने इन्द्रिय–दमन के समान कोई दूसरा धर्म नहीं सुना। सभी धर्म वालो ने जगत में दम को सर्वोच्च बताया है। सभी ने उसकी प्रशंसा की है। क्षमा, वीरवा समता, सत्यवादिता, सरलता, इन्द्रिय विजय, निपुणता, कोमलता लज्जा, अचंचलता, उदारता, क्रोध हीनता, संतोष, मधुर वचन बोलने का स्वभाव किसी भी प्राणी को पीड़ा न देना और दूसरो के दोषों को न देखना, इन सद्‌गुणों का प्रकट होना ही दम कहलाता है।

- जिसे सारे ही प्राणियो से भय नही है और सभी प्राणी जिसकी ओर से निर्भय हो गये है। उस दमनशील और बुद्धिमान पुरुष की सभी वन्दना करते हैं।
- सत्य बोलना शुभ कर्म है। सत्य से बड़ा कोई कार्य नहीं। सबको सत्य ने ही धारण कर रखा है। और सत्य मे प्रतिष्ठित है।
- जो स्वयं जीवित रहना चाहता है। वह दूसरो के प्राण कैसे ले सकता है ? अपने लिये जो–जो सुख सुविधा मनुष्य चाहता है। वही दूसरों के लिए भी सुलभ कराने की बात उसे सोचना चाहिए।

- आलस्य को उद्योग से तथा वितर्क को दृढ़ निश्चय से जीतना चाहिये। मौन का सहारा लेकर बहुत बोलने की आदत को, और शूरवीरता के द्वारा भय को प्याग देना चाहिए।
- अमरता और मृत्यु ये दोनो देह के भीतर ही बसे हुए है मृत्यु मोह से प्राप्त होती है और सत्य से अमृत–पद।
- विद्या के समान कोई मित्र नहीं, सत्य के समान कोई तप नही, राग के समान कोई दुःख नही और त्याग के समान कोई सुख नहीं।
- सत्य ही ब्रह्म है। सत्य ही तप है। सत्य से ही मनुष्य स्वर्ग को पाता है। असत्य, जो अंधकार का रूप है। मनुष्य को नीचे गिरा देता है।
- जिस काम को कल करना हो, उसे आज ही कर लिया जाए। जिसे दोपहर के बाद करना हो, उसे, दोपहर से पहले कर डालना चाहिए, क्योंकि मृत्यु इस बात की वाट नहीं देखती कि इसका काम पूरा हो गया या नहीं।

शेष भाग पेज 21 पर

पशु-पक्षी संरक्षण

– चन्द्रपाल सिह (पूर्व प्रधानाचार्य)

पशु–पक्षी हमारे पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं। इनकी देख रेख की जिम्मेदारी व सुरक्षा करना हमारा नैतिक दायित्व है। पशु पक्षी सुरक्षित रहेंगे तो पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा। पशु–पक्षी के बिना हमारी धरती बिलकुल भी सुन्दर नहीं दिखती है क्योंकि पशु–पक्षी के बिना बहुत से ऐसे कार्य हैं जो नहीं कर सकते।

यह दुनियां यह सृष्टि, यह प्रकृति केवल मानव मात्र के लिए नहीं है बल्कि इसमें सबके लिए बराबर व समान जगह है। इस प्रकृति की अवस्था स्वयं इस तरह है कि एक चक्र का निर्माण करती है जिसमें हर प्राणी चक्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कोई भी प्राणी इस संसार में व्यर्थ नहीं है। पशु पक्षी भी इसी चक्र का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। सभी प्रकृति के विकास में कोई न कोई योगदान अवश्य देते हैं। अतः पशुपक्षियों की संख्या से पर्यावरण का प्रभावित होना निश्चित है।

इस धरती पर हर एक जीव समान है बस अंतर इतना ही है कि मनुष्य ने अपने बुद्धिबल से अपना विकास किया है जिसके कारण मनुष्य सभी जीवों में सबसे बुद्धिमान सबसे शक्तिशाली है। लेकिन मनुष्य अपनी बुद्धि, अपनी शक्ति के उपयोग से वन्य जीवों को नुकसान पहुँचा रहा है। एक मनुष्य और अन्य जीव जन्तुओं में अंतर केवल बुद्धि का ही है। बाकी सभी चीजों में एक समान जीव भी होता है। मनुष्य को दर्द होता है तो अपने दर्द को बयां कर सकते हैं लेकिन पशु–पक्षी अपने दर्द को बयां नहीं कर सकते हैं, उनके दर्द को सुनने वाला कोई नहीं ।

पशु पक्षियों का मनुष्य जीवन में महत्व

हमारे यहाँ पशुओं का बहुत महत्व है। कई पशु तो देवताओं के रूप में पूजे जाते हैं जिनमें से प्रमुख गाय है। हिन्दू धर्म के अनुसार गाय में सभी देवी देवताओं का निवास स्थान माना जाता है। गाय हमें दूध देती है। इसके अतिरिक्त नागों को भी देवता के रूप में पूजा जाता है। नाग पंचमी के दिन इनकी पूजा होती है। सभी पशु किसी न किसी रूप में हमारी मदद ही करते हैं। भैंस, बकरी से भी हमें दूध प्राप्त होता है। ईंधन के रूप में गोबर मिलता है। कुत्ता जो हमारी देख भाल करता है। चोर लुटेरों को हमारे घर में प्रवेश नहीं करने देता। सबसे वफादार जानवर है। बैल और भैंसा को बोझ ढोने, सामान इधर से उधर ले जाने, कुयें से पानी खींचने में उपयोग करते हैं। भारत कृषि प्रधान देश है। सदियों से यहाँ पर अधिकतर जनसंख्या खेती का कार्य करती है और खेती करने के लिए प्राचीन काल से ही बैल का उपयोग किया जा रहा है।

ऊँट को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है। रेगिस्तान में कोई जानवर नहीं चल सकता। केवल ऊँट ही रेगिस्तान में सवारियों को इधर से उधर ले जाता है। सामान को भी ले जाता है। मानव प्राचीन काल से ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए पशुओं का प्रयोग करता आ रहा है।

जितना पशुओं का हमारे जीवन में महत्व होता है उतना ही पक्षियों का भी महत्व होता है। कई पक्षी देवताओं का वाहन हैं। गरुण–विष्णु भगवान का वाहन है। हँस पर ज्ञान की देवी सरस्वती जी विराजमान हैं। उल्लू–लक्ष्मी जी का वाहन है। मयूर राष्ट्रीय पक्षी है और कार्तिकेय जी का वाहन है।

सबसे बड़ी बात पशु–पक्षियों की यह होती है कि यह हमसे किसी भी कारण से नाराज नहीं होते

हैं। अगर प्यार से इनके सर पर हाथ फेर दीजिए तो यह अपनी नाराजगी भूल जाते हैं। आज हमारे देश की दुर्दशा तो यही है कि इंसान तो पशु बन रहा है और पशु इंसान। क्योंकि इंसान को रूठने से के बाद हम नहीं मना सकते लेकिन जानवर बहुत समझदार है। प्यार से सर पर हाथ फेरने से मान जाता है।

आज मनुष्य पशु पक्षियों के जीवन पर एक संकट की तरह मंडरा रहा है क्योंकि हमारे देश में जन संख्या बढ़ रही है। इस वजह से लोग वनों को काट रहे हैं। पशु पक्षियों का घर और जीवन वनों से ही मिलता है। बढ़ती जन संख्या के कारण मनुष्य वनों का विनाश करता जा रहा है। मनुष्य पशु पक्षियों के लिए संकट की तरह बन गया है। उनके घर को छीने जा रहा है। कुछ लोग तो पशु पक्षियों को बंधक बनाकर उनको अपने मनोरंजन के लिए, व्यापार के लिए भी काम में लेते हैं।

इंसान अपने स्वार्थ के लिए पशु पक्षियों को नुकसान पहुँचाता है। मनुष्य अपने मनोरंजन के लिए प्राचीन समय से ही पशु पक्षियों को एक दूसरे से लड़ाने का कार्य करता था जिसमें कई पशु पक्षियों की जान भी चली जाती थी। आज भी लोगों को पक्षी पालने का शौक है। जिस पक्षी को भगवान ने पंख दिया है ताकि वे अपने पंखों के जरिए अनन्त आकाश में घूमने का आनन्द ले सकें। उन्हीं पक्षियों को मनुष्य एक कैदी के रूप में पिंजरे में बन्द कर देता है। मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए पशु–पक्षियों की हत्या करता है और उनके मांस की बिक्री करता है। अत्यधिक पैसे बनाने के लिए जानवरों की हड्डियां, हाथियों के दाँत, पक्षियों के पंख प्राप्त करने के लिए बेजुबान पक्षियों की हत्या करता है। देवी–देवताओं का पूजा के नाम पर ना जाने हर दिन कितने ही जानवारों की बलि चढ़ जाती है। पशु पक्षियों की मृत्यु का कारण केवल इतना ही नहीं है यहाँ तक कि जिस तरह टेक्नोलोजी विकास कर रही है पशुपक्षियों का खतरा उतना ही बढ़ता जा रहा है।

जंगल ही पशु पक्षियों का घर होता है लेकिन मनुष्य जंगलों का भी विनाश करके वहाँ पर ऊँची–ऊँची बिल्डिंगों का निर्माण कर रहा है। मनुष्य के द्वारा निर्मित विभिन्न मशीनों से निकलती प्रदूषित हवा एवं प्रदूषित जल को पीकर ना जाने कितने पशु–पक्षी मर जाते हैं। पक्षियों की कई प्रजातियां जिस तरीके से विलुप्त हो रही हैं। इसे ध्यान में रखते हुई हुए पशु पक्षियों का संरक्षण करना बहुत आवश्यक हो चुका है।

पशु पक्षियों का संरक्षण यदि करना है तो सबसे पहले हमें प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना होगा। जंगलों का विनाश करने से रोकना होगा क्योंकि जंगल पशुपक्षियों का घर है। जंगल नहीं रहेंगे तो पशु पक्षी भी नहीं रहेंगे। इनके संरक्षण के लिए प्रदूषण की रोकथाम आवश्यक है।

पशु पक्षियों को कैद करके नहीं रखना चाहिए। पशु पक्षियों को भी मनुष्य की तरह पूरी आजादी मिलनी चाहिए वे बन्द कमरे में नहीं बल्कि खुले में रहना पसंद करते हैं।

पशुपक्षियों के संरक्षण के लिए सरकार को नये राष्ट्रीय उद्यान और अभ्यारण्यों की स्थापना करनी चाहिए चाहिए। कोई भी व्यक्ति पशु या पक्षी का शिकार न कर पाए इसके लिए सरकार को कठोर नियम बनाने चाहिए। सरकार को जंगलों की अंधाधुंध कटाई को रोकना चाहिए।

हम भी अपने दैनिक जीवन में कुछ कार्य कर सकते हैं और दिनचर्या में सम्मिलित कर सकते हैं–

- ☆ अपनी छत पर पानी रखने के पात्र की व्यवस्था तथा चिड़ियों को दाना डालना।
- ☆ सड़क पर घूम रहे आवारा पशुओं के लिए भी हमें उचित दाना पानी की व्यवस्था करनी

चाहिए तथा पशु संरक्षण संस्थान से संपर्क करके ऐसे पशुओं की रक्षा के लिए उपाय सोचना चाहिए।

- ☆ हमें पशुओं को बेवजह मारना नहीं चाहिए और ना ही मांसाहार को बढ़ावा देना चाहिए।
- ☆ चीटियों को आटा डालना। मछलियों को दाना डालने से बहुत पुण्य का अनुभव होता है।
- ☆ विभिन्न अवसरों पर बचे–खुचे भोज्य पदार्थों एवं खाद्य सामग्री से भरे या खाली पालीथीन खुले में न छोड़कर निर्धारित स्थानों पर इन्हें नष्ट करना चाहिए अन्यथा पशुपक्षी विषाक्त आहार को खाकर बीमार हो जाते हैं।
- ☆ अपने पशुओं को लावारिस हालत में नहीं छोड़ना चाहिए। इससे दुर्घटना ग्रस्त होकर चोटिल होते हैं और अकाल मौत मरते हैं।

प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए वन्य जीवों का संरक्षण (Protection of wild life) आवश्यक है। हमें जंगली जानवरों के संरक्षण की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि हमें वन्य जीवन की प्रजातियों के अस्तित्व को सुनिश्चित करना है अब धीरे–धीरे कई पौधे और जानवरों की प्रजातियां लुप्त हो रही हैं। इन लुप्त प्राय पौधों और जानवरों की प्रजातियों को उनके प्राकृतिक निवास स्थान के साथ–साथ रक्षा करना भी जरूरी है। एक ओर आम इंसान जहाँ अपनी जीवन शैली और आधुनिकता में उन्नति कर रहा है। वहीं दूसरी ओर पेड़ों और जंगलों की भारी कटाई से वन्य जीवों के आवास (Destruction of wild life habit) नष्ट हो रहे हैं। हम अपनी सुख सुविधा के चक्कर में प्रकृति से अधिक छेड़छाड़ Excessive tampering with nature) कर रहे हैं। मानव इन वन्य प्रजातियों के बड़े पैमाने पर विलुप्त होने के लिए पूरी तरह जिम्मेदार हैं।

पृष्ठ 12 का शेष भाग

3. गुरूद्वारा गुरू का बाग : सुल्तानपुर लोधी (कपूरथला) यह गुरु नानकदेवजी का घर था, जहाँ उनके दो बेटों बाबा श्रीचंद और बाबा लक्ष्मीदास का जन्म हुआ था।

4. गुरूद्वारा कोठी साहिब : सुल्तानपुर लोधी (कपूरथला) नवाब दौलतखान लोधी ने हिसाब–किताब में गड़बड़ी की आशंका में नानकदेवजी को जेल भिजवा दिया। लेकिन जब नवाब को अपनी गलती का पता चला तो उन्होंने नानकदेवजी को छोड़ कर माफी ही नहीं माँगी, बल्कि प्रधानमंत्री बनाने का प्रस्ताव भी रखा, लेकिन गुरु नानक ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

5. गुरूद्वारा बेर साहिब : सुल्तानपुर लोधी (कपूरथला) जब एक बार गुरु नानक अपने सखा मर्दाना के साथ वैन नदी के किनारे बैठे थे तो अचानक उन्होंने नदी में डुबकी लगा दी और तीन दिनों तक लापता हो गए, जहाँ पर कि उन्होंने ईश्वर से साक्षात्कार किया। सभी लोग उन्हें डूबा हुआ समझ रहे थे, लेकिन वे वापस लौटे तो उन्होंने कहा–एक ओंकार सतिनाम। गुरु नानक ने वहाँ एक बेर का बीज बोया, जो आज बहुत बड़ा वृक्ष बन चुका है।

सिख धर्म की स्थापना : नानक जी ने 'सर्वमहान, सत्य सत्ता' की पूजा का सिद्धांत प्रतिपादित किया। सिख का शाब्दिक अर्थ होता है–'शिष्य' अर्थात् सिख ईश्वर के शिष्य हैं। सिख परंपरा के अनुसार, सिख धर्म की स्थापना गुरु नानक (1469–1539) द्वारा की गई थी और बाद में नौ अन्य गुरुओं ने इसका नेतृत्व किया।

सूर्य मंदिर में चक्र के बताये वैज्ञानिक कारण

आईईटी में शुक्रवार को इंडक्शन प्रोग्राम के छठवें दिन बायोइंस्पायर्ड इंजीनियरिंग पर सत्र का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो. विनीत कंसल की अध्यक्षता में डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव पूर्व उप निदेशक सीडीआरआई, डॉ. अरविंद माथुर पूर्व वैज्ञानिक, प्रो. पुनीत कुमार, आचार्य भौतिक विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय एवम श्रेयांश मंचसीन रहे। सत्र का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

आईईटी : बायोइंस्पायर्ड इंजीनियरिंग पर आयोजित सत्र में साझा किये गये महत्वपूर्ण तथ्य इस अवसर पर डॉ. अरविंद माथुर ने छात्रों को वैदिक विज्ञान के कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने सूर्य मंदिर में चक्र का वैज्ञानिक कारण भी बताया और नालंदा विश्वविद्यालय की विरासत पर भी जानकारी साझा की। उन्होंने आयुर्वेद के महत्व के बारे में संक्षेप में बात की।

डॉ. पुनीत कुमार ने छात्रों को विज्ञान के क्षेत्र में भारत के समृद्ध इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य साझा किए। सीडीआरआई के पूर्व निदेशक डॉ. प्रदीप कुमार श्रीवास्तव ने छात्रों को अपना परिचय दिया और सिंगापुर में अपने पहले व्याख्यान के बारे में अपना अनुभव साझा किया। उन्होंने साइंसटून से छात्रों को पेरिस्टोलॉजी, कचरा प्रबंधन के बारे में परिचित कराया। उन्होंने छात्रों को बायोइंस्पायर्ड इंजीनियरिंग के बारे में समझाने के लिए बलेट ट्रेन, मैग्लेव, साइबेरियन क्रेन और गेको एडेसिव के बारे में एक दिलचस्प जानकारी दी ।

चन्द्र यान-3

सन्त तुलसीदास जी

जीवन परिचय : गोस्वामी तुलसी दास हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ आदर्शवादी विचारधारा के कवि माने जाते हैं। इनका जीवन वृतान्त अभी तक अंधकार में है। जन्म सन् 1532 में बांदा जिले के राजापुर नामक गांव में हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम दूबे व माता का नाम हुलसी था। इनके माता–पिता ने अभुक्त मूल नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण उनको त्याग दिया था। जिसके कारण बचपन बड़ा कठिन तथा संघर्षमय रहा। सौभाग्य से शास्त्रों का अध्ययन अपने परम श्रेष्ठ गुरु नरहरिदास से काशी में किया इन्होंने सोलह–सत्रह वर्ष तक वेद पुराण का ज्ञान प्राप्त किया। उपनिषद, रामायण तथा श्रीमद्भगवद्गीता का गम्भीर अध्ययन किया।

प्रमुख रचनाएँ : तुलसी दास की प्रमुख रचनाएँ हैं:–

1. गीति काव्य गीतावली, श्रीकृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका।
2. **प्रबंध काव्य** – रामचरित मानस, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामलला नहछू।
3. **मुक्तक काव्य**– दोहावली, कवितावली, **वैराग्यसंदीपनी, रामाज्ञा प्रश्न।**

रामचरितमानस कवि की सर्वश्रेष्ठ रचना है। इस सर्वश्रेष्ठ काव्यको भारत का बाइबिल कहा जाता है।

साहित्यिक विशेषताएँ : गोस्वामी तुलसी दास हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि है इन्हें मानव का पथ प्रदर्शक कवि कहा जाता है। इनके द्वारा कविता की सर्वतोन्मुखी उन्नति हुई है। मानव प्रकृति के जितने रूपों का सजीव चित्रण तुलसीदास ने प्रस्तुत किया है, उतना अन्य किसी ने नहीं किया। इन्हेंने अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना रामचरितमानस के द्वारा व्यक्ति स्तर से लेकर समाज स्तर तक के समस्त अंगों का आदर्श प्रस्तुत किया है।

मृत्यु : इनकी मृत्यु सन् 1623 में काशी में वाराणसी के असी घाट पर हुई संवत् सोलह सौ असी असी गंग के तीरे श्रावण शुक्ल सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर।

पृष्ठ 16 का शेष भाग

- 'जो कल्याणकारी कार्य है उसे तुम आज ही कर डालो। यह महान काल नहीं तुम्हे लाँघ न जाए। कौन जानता है कि आज किसकी मौत की घड़ी आ पहुंचेंगी।
- शांति के समान कोई तप नहीं
  संतोष से बढ़कर कोई सुख नहीं
  तृष्णा से बढ़कर कोई व्याधि नहीं
  और दया के समान कोई धर्म नहीं।

चाणक्य

राणा पूंजा भील

राणा पूंजा मेवाड़ एक भील योद्धा थे, जिन्होंने हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रतापका साथ दिया था। युद्ध में पूंजा भील ने अपनी सारी ताकत देश की रक्षा के लिए झोंक दी। हल्दीघाटी के युद्ध के अनिर्णित रहने में गुरिल्ला युद्ध प्रणाली का ही करिश्मा था, जिसे पूंजा भील के नेतृत्व में काम में लिया गया।

परिचय : इतिहास में उल्लेख है कि राणा पूंजा भील का जन्म मेरपुर के मुखिया दूदा होलंकी के परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम केहरी बाई था, उनके पिताका देहांत होने के पश्चात 15 वर्ष की अल्पायु में उन्हें मेरपुर का मुखिया बना दिया गया। यह उनकी योग्यता की पहली परीक्षा थी, इस परीक्षा में उत्तीर्ण होकर वे जल्दी ही 'भोमट के राजा' बन गए। अपनी संगठन शक्ति और जनता के प्रति प्यार–दुलार के चलते वे वीर भील नायक बन गए, उनकी ख्याति संपूर्ण मेवाड़ में फैल गई। इस दौरान 1576 ई. में मेवाड़ में मुग़लों का संकट उभरा। इस संकट के काल में महाराणा प्रताप ने भील राणा पूंजा का सहयोग मांगा। ऐसे समय में भील मां के वीर पुत्र राणा पूंजा ने मुग़लों से मुकाबला करने के लिए मेवाड़ के साथ अपने दल के साथ खड़े रहने का निर्णय किया। महाराणा को वचन दिया कि राणा पूंजा और मेवाड़ के सभी भील भाई मेवाड़ की रक्षा करने को तत्पर है। इस घोषणा के लिए महाराणा ने पूंजा भील को गले लगाया और अपना भाई कहा ।

हल्दीघाटी युद्ध में योगदान : 1576 ई. के हल्दीघाटी युद्ध में राणा पूंजा ने अपनी सारी ताकत देश की रक्षा के लिए झोंक दी। हल्दीघाटी के युद्ध के अनिर्णित रहने में गुरिल्ला युद्ध प्रणाली का ही करिश्मा था, जिसे पूंजा भील के नेतृत्व में काम में लिया गया। इस युद्ध के बाद कई वर्षों तक मुग़लों के आक्रमण को विफल करने में भीलों की शक्ति का अविस्मरणीय योगदान रहा तथा उनके वंश में जन्मे वीर नायक पूंजा भील के इस युगों–युगों तक याद रखने योग्य शौर्य के संदर्भ में ही मेवाड़ के राजचिन्ह में एक ओर राजपूत तथा एक दूसरी तरफ भील प्रतीक अपनाया गया है। यही नहीं इस भील वंशज सरदार की उपलब्धियों और योगदान की प्रमाणिकता के रहते उन्हें 'राणा' की पदवी महाराणा द्वारा दी गई। अब राजा पूंजा भील राणा पूंजा भील' कहलाये जाने लगे।

बुद्धि वाला होकर दण्ड कैसे दूँ ?

पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिहं कही जा रहे थे। अकस्मात एक बेल आकर उन्हें लगा। महाराणा को चोट लग गयी। साथी दौड़े और एक बुढ़िया को पकड़कर उनके सामने कर दिया।

बुढ़िया भय के मारे काँप रही थी। उसने हाथ जोड़कर कल महाराज मेरा बच्चा तीन दिन से भूखा था। खाने को कुछ नहीं मिला। मैंने पके बेल को देखकर उसे खिलाकर उसे तोड़ने के लिए ठेला भारा था लग जाता तो बेल टूट पड़ता, उसे खिला कर अपने बच्चे के प्राण बचा लेती पर है भाग्य, आप बीच में आ गये और ठेला आपको लग गया। इसका मुझे बढ़ा दुःख है। पर मैंने जान बूझकर ठेला नहीं मारा। क्षमा कीजिए।''

सहशिक्षा और बालिका शिक्षा-बालिकाओं के लिये

डॉ० गीता गुप्ता
उपाध्यक्षा, भा० श्रीविद्या परिषद्,

प्रिय शिवानी, स्नेहाशीष

एक लम्बे अन्तराल के बाद तुम्हारा पत्र पाकर सुखद आश्चर्य हुआ, सहशिक्षा की प्रबल पक्षधर और स्त्री–पुरुष समानता की वकालत करने वाली तुम समाज में चतुर्दिक घटती घटनाओं से व्यथित हो और इसी के परिणामस्वरूप तुमने बालिका शिक्षा का पक्ष लेने वाली मुझे यह पत्र लिखा है। सर्वप्रथम तो मैं तुम्हें यह स्पष्ट कर दूँ कि यह सब जो आज समाज में हो रहा है, यह बेटियों को बेटा बनाकर पालने, सहशिक्षा में पढ़ाने, पुरुषों के समकक्ष समझने और पाश्चात्य संस्कृति के अनुसार रहन–सहन में ढलने का ही परिणाम है। मूल्यविहीन और भारतीयता – भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों से शून्य शिक्षा ने हमारे राष्ट्र की मूल इकाई परिवार के भाव–अपनेपन और एकात्मता को प्रदूषित कर दिया है। परिवार टूट रहे हैं, बिखर रहे हैं, सन्तति को दिशा देने वाला कोई नहीं। इस कारण बीमारी की जड़ का संज्ञान अब सभी को होने लगा है–शिक्षाविदों को, मनोवैज्ञानिकों को और समाजशास्त्रियों को। मेरी दृष्टि में यह एक संतोषजनक स्थिति है। बीमारी तो समझ में आ गयी है, बस उसकी जड़ पर प्रहार करना है। इस जड़ तक पहुँचने के लिये हमें पहले भारतीय संस्कृति को समझना आवश्यक है।

भारत भूमि पुण्यभूमि है। आध्यात्मिकता इसकी पहचान है। हमारा लक्ष्य भारतीय चिन्तन को आगे बढ़ाना है। हमारे ऋषियों ने सृष्टि के क्रम को आगे बढ़ाने के लिये सामूहिक जीवन की कल्पना की थी। परस्पर सम्बन्ध बनाने हेतु परिवार और पारिवारिक जीवन की कल्पना की थी–केवल अपनी भारतभूमि पर ही नहीं, अपितु पूरी धरती पर पूरे विश्व को ही एक परिवार बनाने का स्वप्न देखा था। इस चिन्तन के पूल में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का ही भाव है। अकेले तो ईश्वर भी कुछ नहीं कर सकता। उसने भी स्वयं को 'एकोऽहं बहुस्याम', रूप की कल्पना की। इस पूरी सृष्टि का विस्तार किया। इसे आगे बढ़ाने के लिए 'स्त्री एवं पुरुष' की संरचना की। दोनों ने मिलकर 'परिवार' बनाया। स्त्री स्त्री है, पुरुष पुरुष है। न स्त्री पुरुष हो सकती है और न ही पुरुष स्त्री हो सकता है। दोनों एक दूसरे के सहयोगी हैं। शिवा बेटी! यद्यपि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक दृष्टि से स्त्री और पुरुष के कार्यक्षेत्र और व्यवहार क्षेत्र में समानता दृष्टिगोचर होती है, परन्तु दोनों की मूल प्रकृति में अन्तर है और तुम इस अन्तर से भलीभाँति परिचित हो। फिर भी और अधिक स्पष्टता के लिए मैं इसे और अधिक स्पष्टता से तुम्हारे सम्मुख रखना चाहूँगी–

शारीरिक संरचना की भिन्नता : ईश्वर ने दोनों की शारीरिक संरचना में भिन्नता रखी है। स्त्री के जीवन में किशोरावस्था (वयः सन्धि की उम्र) जीवन का नाजुक और संवेदनशील काल होता है। इसे उसके पूरे भावी जीवन की यात्रा और इस रूप में परिवार की नियति और राष्ट्र की प्रगति को प्रभावित करने वाला काल कहा जा सकता है। इस समय प्राकृतिक रूप से जो शारीरिक परिवर्तन होते हैं, उनसे अपने प्रति हीनता की भावना विकसित न होने पाए इसके प्रति बालिका में सचेत दृष्टि जाग्रत

करने और इसे स्वाभाविक विकास मानते हुए सहज भाव से विकसित किया जाना अपेक्षित होता है। इन परिवर्तनों के दूरगामी सकारात्मक प्रभावों की जानकारी इस प्रकार दी जानी होती है कि बालिका के मन में गौरव की अनुभूति हो– स्वाभिमान का भाव जागृत हो।..... इस प्रकार के भाव का सम्प्रेषण माँ अथवा महिला शिक्षिका के द्वारा ही किया जाना संभव हो सकता है– वे ही इस कार्य को सहजता से कर सकती हैं।

मनोवैज्ञानिक भिन्नता : ईश्वर ने स्त्री और पुरुष दोनों की मानसिक संरचना में अन्तर किया है। या यूँ कहें कि दिमागी सॉफ्टवेयर में ही अन्तर है। दोनों के प्रोग्राम अलग–अलग तरह से फीड किये हुए हैं। पुरुष के दिमाग में एग्रेसिवनेस, शिकार, व्यापार, अकेलेपन की परवाह न करना, नेतृत्व क्षमता आदि तत्व होते हैं तो स्त्री के दिमाग में समर्पण, मातृत्व, सेवा, मित्रता, स्वयं का शृंगार आदि तत्वों की अधिकता होती है। इस लिंग भेद को नकारा नहीं जा सकता। इसलिये दोनों की शिक्षा/ट्रेनिंग भी भिन्न प्रकार की ही दी जानी अपेक्षित है।

गुणों की भिन्नता : ईश्वर ने दोनों के नैसर्गिक गुणों में भी भिन्नता रखी है। पुरुषों में प्रायः हाँ यह धैर्य, दया, माया, ममता, करुणा, सहानुभूति एवं त्याग आदि की भावना दृष्टिगत नहीं होती जो एक स्त्री में होती है। एक छोटी बालिका गुड़िया से खेलते हुए जिस प्रकार उसकी घर गृहस्थी को संभालने में रुचि दिखाती है, बालकों में उसका सर्वथा अभाव होता है। बालिका के इस प्रकार के नैसर्गिक गुणों के पनपने या विकसित होने का अवसर सहशिक्षा में नहीं होता, बालिका शिक्षा में ही संभव हो सकता है।

आवश्यकताओं की भिन्नता : स्त्री जननी है। आज की बालिका को आगे चलकर मातृत्व का दायित्व निभाना है, परिवार को देखना है, सन्तति को संस्कार देने हैं, राष्ट्र को योग्य संस्कारित जीवन मूल्यों का पालन करने वाले नागरिक देने हैं। साथ ही भारतीय संस्कृति का संरक्षण, संवर्धन और पोषण करना है..... इन दायित्वों का निर्वाह करने योग्य उसे सहशिक्षा में नहीं बनाया जा सकता। उक्त भिन्नताओं और भिन्न व्यवहार को तुमने अपने बच्चों में बेटे और बेटी के बाल्यकाल में स्वयं भी देखा और अनुभव किया होगा।

यहाँ हमें एक बात निश्चित रूप से समझ लेनी चाहिए कि जब ईश्वर–प्रकृति ने ही स्त्री और पुरुष को भिन्न बनाया है तो हम इन दोनों को एक जैसी शिक्षा देकर एक जैसा बनाने का प्रयत्न कैसे कर सकते हैं? विकास के समस्त प्रयासों में हमें बेटी को बेटी ही बने रहने की शिक्षा देनी है और बेटे को शौर्य एवं वीरत्व से युक्त बेटा बनाने की शिक्षा देनी है। दोनों की शिक्षा ऐसी हो, जो उनके नैसर्गिक गुणों को और अधिक उजागर करे। सहशिक्षा के माध्यम से ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सकता..... यहाँ यह सब कहने का मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि बालिकाओं को उच्च शिक्षा न दी जाये, उन्हें डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक... और भी बहुत कुछ बनने की शिक्षा तो अवश्य दी जाये, पर विद्यालय के स्तर पर उन्हें घर, परिवार, धर्म, संस्कृति आदि की भी शिक्षा दी जाये और ऐसी शिक्षा बालिका शिक्षा के विद्यालयों में ही दी जानी सम्भव हो सकती है। औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा साथ–साथ चलेंगी, तभी "बचेगी संस्कृति, सृष्टि और संस्कार और तभी बनेगा भारत एक समर्थ राष्ट्र।

आज ऐसी अनेक महिलाओं के उदाहरण हमारे सम्मुख हैं जिन्होंने घर और बाहर दोनों मोर्चों पर अपने दायित्व को बखूबी निभाया है। माँ बनकर अपनी संस्कृति को अच्छे संस्कारों और मूल्यों की शिक्षा दी है, तो अपने कैरियर के क्षेत्र में भी अपनी योग्यता, प्रबन्धन आदि को सफलता पूर्वक सिद्ध किया है। तुम आज की इन महिलाओं से भलीभाँति परिचित हो। ऐसी महिलाएं भारतवर्ष में भी हैं और विदेशों में भी हैं।

यहाँ मैं सन् 2001 में 'महिला सशक्तिकरण' वर्ष मनाने के उपलक्ष्य में विज्ञान भवन, दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में दिये गये पूर्व प्रधानमंत्री मान्यवर श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी के भाषण का एक अंश उद्धृत कर रही हूँ। उन्होंने कहा था–"स्त्री, पुरुष की तुलना में अपनी विशिष्टताओं के कारण विशेष है। स्त्री की प्रगति से पूरे परिवार, समाज और अंततः देश का उत्थान जुड़ा है। जो लोग समानता के नाम पर स्त्री को पुरुष बनाने पर तुले हैं, वे उपहास के पात्र हैं। स्त्री को स्त्री ही रहना है .....'स्पष्ट है कि स्त्री, स्त्री बनी रहे इसके लिये उसे बालकों से भिन्न शिक्षा दिये जाने की आवश्यकता है और ऐसा सहशिक्षा के विद्यालयों में किया जाना संभव नहीं है। बालिकाओं की पृथक् शिक्षा की व्यवस्था किया जाना अवश्यम्भावी है... 1981–82 में नागपुर में हुई बैठक में स्वयं लज्जारामजी तोमर और माननीय दीनानाथ बत्रा जी ने इस विषय पर गहन चिन्तन और विचार–विमर्श किया था। माननीय भाउराव जी तथा अन्य शिक्षाविदों के चिन्तन मनन के परिणामस्वरूप किये गये अथक् प्रयास से सन् 1987 में 'बालिका शिक्षा' को दिशा देने का कार्य 'भारतीय श्री विद्या परिषद्' की स्थापना के साथ प्रारम्भ किया गया।... तुम्हें ज्ञात ही है। कि इस समय तक पूरे भारत में अनेकों बालिका विद्यालय इस दिशा में कार्य कर रहे हैं।

उक्त विवेचन के पश्चात् मुझे विश्वास है कि तुम्हारे मन में निश्चित रूप से बालिका शिक्षा की बालिकाओं के लिये क्या और क्यों आवश्यकता है और सहशिक्षा के विद्यालयों में आदर्श बालिका का निर्माण क्यों नहीं किया जा सकता यह अन्तर स्पष्ट हो गया होगा।... अब तुम्हें अपने महिला क्लब की बहनों को भी इस विषय की जानकारी देकर जागरुक बनाना है और बालिकाओं को बालिका बने रहने की शिक्षा देने का अभियान चलाना है।

प्रिय गौरव और गार्गी को आशीष अन्य सभी परिवारीजनों को यथायोग्य अभिवादन!

शुभकामनाओं सहित, तुम्हारी दीदी !

अपनी ओर खीचती है

एक मनुष्य ने कहीं सुना कि रुपया रुपये को खींचता है। उसने इस बात को परखने का निश्चय किया। सरकारी खजाने में रुपये का ढेर लगा था। वहीं खड़ा होकर वह अपना रुपया दिखाने लगा ताकि ढेर वाले रुपये खिंचकर उसके पास चले आयें। बहुत कोशिश करने पर ढेर के रुपये तो न खिंचे वरन् उसका रुपया छूटकर ढेर में गिर गया।

खजांची का ध्यान इस खटपट की ओर गया। उस व्यक्ति पर शक करके पकड़वा दिया। पूछताछ हुई तो उसने सारी बात कह सुनायी। अधिकारी ने हँसते हुए कहा–''जो सिद्धान्त तुमने सुना था, वह ठीक था; पर इतनी बात तुम्हें और समझनी चाहिए कि ज्यादा चीजें थोड़ी चीजों को खींच लेती हैं। ज्यादा रुपये के आकर्षण में तुम्हारा एक रुपया खिंच गया। इस दुनिया में ऐसा ही होता है। 'बुराई या अच्छाई की शक्तियों में से जब भी बढ़ी चढ़ी होती हैं। तब विरोधी विचार के लोग भी बहुमत के प्रवाह में बहने लगते हैं।'

बालकोना

बोतल के मुँह के नीचे से सिक्का हटाओ (भाग 'ख')

(The Coin Under The Bottle (Part-II)

आवश्यक सामग्री – एक लीटर की बोतल (ढक्कन सहित), पानी, पाँच रुपये का एक सिक्का, आधा मीटर (½) का धागा तथा टेबल की समतल सतह।

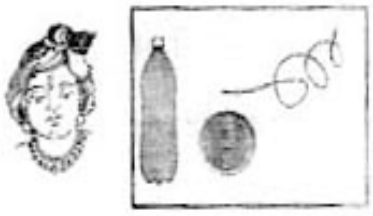

ऐसा करो –

1. बोतन में ¼ (एक चौथाई) भाग पानी भर दो, इसके ढक्कन को मजबूती से बन्द कर दो।

2. टेबल के समतल सतह पर एक कोने में पाँच रुपये का सिक्का रख दो।

3. सिक्के के ऊपर बोतल को पलटकर लम्बवत् रख दो।

4. किसी मित्र को कहो कि वह धागे की सहायता से सिक्के को बिना बोतल को गिराये या लुढ़काये नीचे से हटाए।

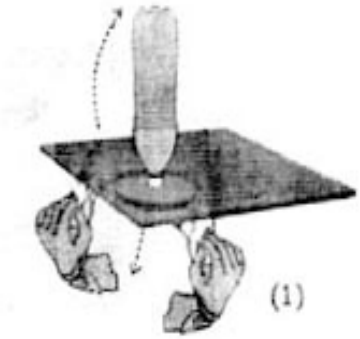

आप देखते हैं कि –सिक्के के चारों ओर धागे के द्वारा वृत्तीय पथ के रूप (धागे के) में उसके सिरों को मिलाकर, पुनः उसके सिरे को खींचते हुए सिक्के पर धक्का (बल) आरोपित किया जाता है।

वैज्ञानिक कारण –

1. किसी वस्तु पर बल लगाने से उसमें गति उत्पन्न हो जाती है।

2. सिक्का एवं बोतल दोनों ही विरामावस्था में हैं।

3. जब धागे के सिरे को बल से खींचा जाता है तो सिक्का धागे के साथ गतिशील होकर बाहर निकल आता है और बोतल स्थिर जड़त्व के कारण स्थिर अवस्था में ही रह जाती है।

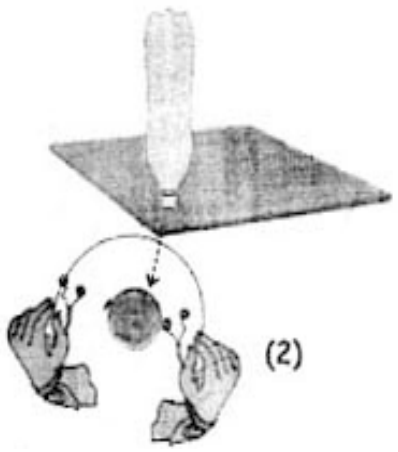

सिद्धान्त- यह प्रयोग न्यूटन के गति के प्रथम नियम पर आधारित है। इसमें जड़त्व के सिद्धान्त का भी पालन होता है। प्रत्येक वस्तु अपनी स्थिर व गतिज अवस्था में ही रहना चाहती है, जब तक उस पर बाह्य बल न लगाया जाए।

दैनिक जीवन में प्रयोग -कम्बल को डंडे से पीटने पर, आरोपित बल के कारण कम्बल गतिशील हो जाता है, परन्तु स्थिर जड़त्व के कारण धूल स्थिर अवस्था में ही रहती है और कम्बल से अलग हो जाती है।

गतिविधियाँ

ज्वाला देवी गंगापुरी में श्रीकृष्ण जन्म छठी उत्सव हुआ सम्पन्न

रज्जू भैया प्रसार समिति द्वारा संचालित ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज गंगापुरी प्रयागराज में कल दिनांक 12.09.2023को श्रीकृष्ण छठी उत्सव एवं राधा–कृष्ण रूप सज्जा प्रतियोगिता कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर श्रीमती रचना मिश्रा (विद्यालय मातृ भारती की अध्यक्ष) विद्यालय के प्रधानाचार्य युगल किशोर मिश्र व विद्यालय मातृ भारती की बहन ने राधा कृष्ण की प्रतिमा पर दीपार्चन एवं पुष्पार्चन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

कार्यक्रम की संयोजिका रोली मालवीया ने कार्यक्रम में उपस्थित मात्र शक्तियों का परिचय कराते राधा–कृष्ण के चरित्र पर विस्तृत प्रकाश डाला।

इस प्रतियोगिता में विद्यालय के लगभग 68 भैया/बहिनों ने राधा–कृष्ण के वेश में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर विद्यालय के सभी प्रतिभागी भैया/बहनों ने मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया।

विशाल गणित-विज्ञान मेले का समापन

कृष्ण चंद्र गांधी सरस्वती शिशु मंदिर माधव कुंज मथुरा में जनपद स्तरीय गणित विज्ञान मेला का शुभारंभ विद्यालय के संरक्षक– मुरारी लाल अग्रवाल, संकुल प्रमुख देवी प्रसाद चतुर्वेदी व दीपेश श्रीवास्तव ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य दिनेश सिकरवार ने सभी अतिथियों का परिचय कराकर उन्हें सम्मानित किया।

इस गणित विज्ञान मेले में विद्या भारती से संबद्ध, शिशु शिक्षा समिति द्वारा संचालित मथुरा जनपद के सभी 12 विद्यालयों ने प्रतिभाग किया। इस अवसर पर बोलते हुए संभाग निरीक्षक हरवीर सिंह चाहर ने कहा कि इस प्रकार की बौद्धिक प्रतियोगिताओं का आयोजन शिशुओं के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर किया जाता है। ये प्रतियोगिताएं विद्यालय स्तर से लेकर जिला, प्रांत, क्षेत्र व अखिल भारतीय स्तर तक आयोजित होती हैं। इस विज्ञान गणित मेले में गणित व विज्ञान प्रश्न मंच की टीमों के साथ–साथ अनेक प्रकार के मॉडल गणित व विज्ञान के नवाचार के विभिन्न प्रयोग प्रदर्शित किए गए। विज्ञान के मॉडलों में चंद्रयान–3, यातायात के साधन, पर्यावरण संरक्षण, प्राथमिक चिकित्सा, स्वच्छता आदि से संबंधित मॉडल प्रमुख रूप से रहे। विज्ञान प्रश्न मंच में माधव कुंज तथा गणित प्रश्न मंच में प्रताप बाजार वृंदावन की टीम ने पहला स्थान प्राप्त किया। विज्ञान व गणित मॉडल में कोसीकला ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

गान्धी शास्त्री जयन्ती मनाया गया

आज दिनांक 2 अक्टूबर 2023, सोमवार को प्रातः 10:00 बजे से विद्यालय में देश की दो महान विभूतियों "महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती" के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किया

गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती रश्मि एवं प्रधानाचार्या श्रीमती शिप्रा बाजपेई जी द्वारा प्रज्ज्वलन, माँ सरस्वती की वन्दना द्वारा हुआ ।

प्रबन्ध समिति एवं प्रधानाचार्या द्वारा ध्वजारोहण–राष्ट्रगान, तत्पश्चात दीप–प्रज्जवलन किया। आचार्या श्रीमती निधि सिंह जी एवं श्रीमती जया मिश्रा जी ने अपने उद्‌बोधन से महात्मा गांधी व शास्त्री जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित कराया और विद्यालय की छात्राओं को बापू एवं शास्त्री जी के जीवन चरित्र से प्रेरणा हेतु प्रेरित किया गया ।

कार्यक्रम में विद्यालय की आचार्या सुश्री शिवम शर्मा ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किया। विद्यालय की छात्रा बहनों ने अपनी ओजस्वी वाणी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री की जयन्ती उद्‌घोष कर उनकी महानता को याद किया।

विद्यालय प्रधानाचार्य श्रीमती शिप्रा बाजपेई जी ने छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें राष्ट्रपुरुषों की जयन्ती एक दिन मनाकर ही इतिश्री नही करनी है अपितु उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर जीवन पर्यन्त चलकर ही हम अपने सपनों का भारत बनाने में सफल हो पाएंगे।

इस अवसर पर विद्यालय प्रबन्ध समिति के सदस्य सी.ए. श्री अमित गुप्ता जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन आचार्या सुश्री अपूर्वा त्रिपाठी द्वारा किया गया ।

कुशलता हेतु प्रशिक्षण है आवश्यक

विद्या भारती ब्रज प्रदेश के तत्वावधान में आज प्रांतीय प्रशिक्षण टोली के कार्यकर्ताओं की एक दिवसीय बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के पूर्व अखिल भारतीय शिक्षण प्रशिक्षण प्रमुख श्री राजेंद्र सिंह बघेल ने पूर्व में हुए प्रशिक्षण वर्गों की समीक्षा के उपरान्त संबोधित करते हुए कहा कि प्रशिक्षण क्यों, कब और कैसे किए जाएं इसका चिन्तन– नियोजन करना बहुत आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि क्रियान्वयन के लिए पहले कार्यकर्ताओं का मन बनाना पड़ता है। क्या वे हमारी बात सुनने के लिए तैयार हैं ? मानसिक स्थिति ठीक होने पर परिणाम ठीक आते हैं। शिक्षा नीति, पाठश्चर्या,पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तक, शिक्षण शास्त्र, मूल्यांकन और अनुवर्तन को ध्यान में रखकर पाठ्य पुस्तकों का निर्माण होना चाहिए, जिसमें क्षेत्र, वातावरण, आयु को ध्यान में रखकर पाठ लिखना बहुत आवश्यक होता है। हमारी गतिविधियों का प्रतिलिपिकरण होना समय की आवश्यकता है, इस और भी ध्यान देना चाहिए।

विद्या भारती ब्रज प्रदेश के संगठन मंत्री श्री हरी शंकर ने कहा कि शिक्षण में नवाचार के प्रयोग करते हुए आनंदमय कोष की ओर बच्चों को ले जाना चाहिए। इससे अधिगम स्थाई होता है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से व्यक्तिगत लघु पुस्तकालय निर्माण करने पर बल दिया। संगठन मंत्री ने कहा कि हमारी प्रशिक्षक टोली को अपने ओर यानी परिक्षेत्र में समयदानी कार्यकर्ताओं की खोज करके उन्हें अपने कार्य में सहायक बनाना चाहिए। हमारा कार्य हमारी संस्कृति के अनुरूप रहे यह बहुत आवश्यक है।

जयन्ती सम्पन

सरस्वती शिशु मंदिर किदवई नगर

प्रयागराज में शिक्षक दिवस के उपलक्ष में डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन कर भईया बहनों के साथ कार्यक्रम मनाया गया जिसमे प्रबंध समिति के प्रबंधक श्री राम नारायण मौर्य जी, कोषाध्यक्ष श्री रजनी रमन मिश्र जी, वरिष्ठ समाज सेवी श्री दीपक जी के द्वारा उपहार एवं शुभाशीष प्राप्त हुआ। तत्पश्चात प्रांतीय योजना अनुसार निबंध प्रतियोगिता हुई जिसमे आचार्य परिवार की पूर्ण सहभागिता रही। सभी आदर्श, सम्मानित, गुरुजनों को शिक्षक दिवस की असीमित शुभकामनाएं

विनम्र श्रद्धांजलि

सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रामबाग के पूर्व कोषाध्यक्ष व विद्यालय की प्रबंध समिति में नामित सदस्य परशुराम अग्रवाल उपाख्य घनश्याम अग्रवाल का आज निधन हो गया। उनके निधन पर विद्यालय में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गोविंद सिंह ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा 2 मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शान्ति एवं उनके परिवार को यह असीम दुःख सहन करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गई।

विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री गोपाल गाडिया, प्रबंधक डॉ. सुरेंद्र प्रताप सिंह, कोषाध्यक्ष ओम प्रकाश गुप्त और समस्त पदाधिकारियों ने भी अपनी शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि विद्यालय के प्रति उनके समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा को भुलाया नही जा सकता।

श्रद्धांजलि सभा में विद्यालय के सभी भैयाओ के साथ साथ समस्त आचार्य एवं कर्मचारी बंधुओ की भी उपस्थिति रही।

क्षेत्रीय ज्ञान विज्ञान मेला

अखिल भारतीय विद्या भारती शिक्षण संस्थान से सम्बद्ध विद्या भारती पूर्वी क्षेत्र का क्षेत्रीय ज्ञान विज्ञान मेला 2023 का आयोजन जब सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सुल्तानपुर में किया गया जिसमें पूर्वी उत्तर प्रदेश के शासकीय 49 जिलों में संचालित सरस्वती शिशु विद्या मन्दिर के 658 भैया बहनो ने वैदिक गणित विज्ञान सांस्कृतिक प्रतियोगितायों में प्रतिभाग किया।

इस कार्यक्रम में जन शिक्षा समिति अवध प्रान्त के 83 भैया बहन व 1 आचार्य ने प्रतिभाग किया। जिसमें बाल वर्ग विज्ञान प्रदर्श कचरा प्रबंधन में विद्या शुक्ला इटियाथोक गोंडा गणित पत्रवाचन में श्रेया त्रिपाठी रामनगर अंबेडकरनगर किशोर वर्ग गणित प्रदर्श में प्रिंस चौहान पाली हरदोई अर्पित पाल मैगलगंज खीरी आचार्य पत्रप्रस्तुति में शिवम तिवारी पाली हरदोई ने प्रथम स्थान प्राप्त कर प्रान्त का नाम रोशन किया।

प्रांतीय ज्ञान विज्ञान मेले के विजेता

विद्या भारती द्वारा आयोजित प्रांतीय ज्ञान विज्ञान मेले में सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रामबाग के जिन छात्रों ने अपनी सफलता का परचम लहराया, उन्हें आज विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गोविंद सिंह द्वारा वंदना सभा में सम्मानित किया गया। 138 अंक पाकर रामबाग बस्ती संकुल पूरे गोरक्ष प्रान्त में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

ज्ञात हो कि बलिया में आयोजित प्रांतीय ज्ञान विज्ञान मेले में सरस्वती विद्या मंदिर के छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। अखिल भारतीय संस्कृति ज्ञान प्रश्न मंच के किशोर वर्ग में भैया रोहित गुप्ता,

शशांक मिश्रा और पुष्कर सिंह पटेल की टीम ने पूरे प्रांत में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार संस्कृति ज्ञान परीक्षा के बाल वर्ग प्रश्नमंच में भी विद्यालय के भैया प्रियांशु शुक्ल, हिमांशु पटेल और आयुष ओझा ने प्रान्त में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वैदिक गणित प्रश्न मंच के किशोर वर्ग में भी भैया युवराज द्विवेदी, आदित्य त्रिपाठी और आनंद मोहन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी क्रम में तरुण वर्ग में गणित प्रयोग में अभिमन्यु वर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। साथ ही किशोर वर्ग के विज्ञान मॉडल में हर्ष मिश्रा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

इसी प्रकार सेंसर बेस्ड मॉडल में सुमित पांडेय, विज्ञान प्रयोग में जय किशन शुक्ला और वैदिक गणित पत्र वाचन किशोर वर्ग में आकाश पांडेय ने पूरे प्रांत में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। किशोर वर्ग विज्ञान प्रश्न मंच में विद्यालय की टीम के भैया प्रफुल्ल पांडेय, शुभम उपाध्याय और प्रिंस राव प्रांत में तृतीय स्थान पर रहे। तरुण वर्ग विज्ञान प्रदर्श आशीष पांडेय तृतीय स्थान पर तथा गणित प्रदर्श बाल वर्ग में देवांश प्रताप पाल भी पूरे प्रांत में तृतीय स्थान पर रहे।

छात्रों की इस सफलता पर विद्यालय के प्रधानाचार्य गोविन्द सिंह जी ने सभी छात्रों को बधाई तथा आगामी क्षेत्रीय तथा अखिल भारतीय प्रतियोगिता के लिए उन्हें शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर समस्त विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

गोरखपुर। सरस्वती शिशु मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सुभाषचन्द्र बोस नगर, सूर्यकुण्ड, गोरखपुर के प्रधानाचार्य राज बिहारी विश्वकर्मा द्वारा अपनी विज्ञप्ति में बताया कि सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया के सर्तकता जागरूकता 2023 के अन्तर्गत विद्यालय में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। "निबंध प्रतियोगिता में कक्षा 1 से 5 तक के लिए विषय : भ्रष्टाचार तथा उसका उन्मूलन एवं कक्षा 6 से 10 तक विषय : भ्रष्टाचार को कहें ना : राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता रहा। "

निबंध प्रतियोगिता में कक्षा 1 से 5 तक क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय–समृद्धि यादव, नितिन यादव, श्रद्धा शर्मा तथा कक्षा 6 से 10 तक क्रमशः सूर्यांश पाण्डेय, राजन कुमार सिंह, कृष्णा कुशवाहा सफल रहे। इन्हें सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया गोरखपुर के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री राकेश कुमार सिंह, सूर्यकुण्ड शाखा के शाखा प्रबंधक श्री डी0 के0 सिंह, सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया के सर्तकता जागरूकता अधिकारी श्री राहुल आनन्द एवं प्रधानाचार्य राज बिहारी विश्वकर्मा द्वारा प्रमाण पत्र एवं उपहार देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया के सर्तकता जागरूकता अधिकारी श्री राहुल आनन्द ने सर्तकता जागरूकता के बारे में छात्रों को विस्तृत से बताया एवं सर्तकता जागरूकता व भ्रष्टाचार उन्मूलन का छात्रों को शपथ दिलाया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्पार्चन एवं दीप प्रज्वलन से किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री राज बिहारी विश्वकर्मा ने अतिथियों का स्वागत एवं परिचय कराया। कार्यक्रम का संचालन श्री व्यास कुमार श्रीवास्तव व आभार ज्ञापन उप प्रधानाचार्य रमेश सिंह ने किया। इस अवसर पर विद्यालय प्राथमिक वर्ग प्रभारी श्रीमती प्रियंका सिंह, सहित सभी आचार्य एवं छात्र उपस्थित रहे।

खेलकूद समारोह - 2023

डाक पंजी. क्र.: **S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023**
प्रेषण डाकघर–रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि– **5,6,7,8**

34 वॉ क्षेत्रीय खेलकूद समारोह - 2023

मुद्रकः प्रिन्टको प्रिन्टर्स–**22**, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ– **226020**, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।
प्रकाशन तिथि : **01.11.2023**

UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023

शिशु मन्दिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष - 40 | अंक - 03 | युगाब्द - 5125 | विक्रम संवत् - 2080 | नवम्बर - 2023

मूल्यः 12

शुभ दिपावली

सर्व दुःख हरे देवि महालक्ष्मि नमोस्तुते।।

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-405302
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
ईमेल :
umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिंटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्रा।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

स्वास्थ्य एवं सानंद

स्वास्थ्य ही धन है। कहा जाता है कि, **"अगर धन चला जाए तो कुछ नहीं जाता परन्तु यदि स्वास्थ्य ठीक न हो तो सब कुछ खत्म हो जाता है।"** स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। शरीर से कमजोर मनुष्य कई प्रकार के कार्य के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें अपनी दिनचर्या सही करनी चाहिए। हमें संतुलित भोजन करना चाहिए। फल, दूध, दही और हरी सब्जियों का सेवन करना चाहिए। सुबह की सैर करना शरीर को चुस्त रखता है। व्यायाम करना शरीर को कई प्रकार की बीमारियों से बचाता है। शरीर के ठीक होने पर कार्य करने का, पढ़ने का भी मन करता है। आलस्य दूर रहता है। स्वस्थ बच्चे पढ़ाई में सदा आगे रहते हैं। ऐसे बच्चे काम से जी नहीं चुराते हैं। अच्छा स्वास्थ्य भगवान का दिया हुआ धन है। जिसकी देखभाल करना हमारा धर्म है। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि जितनी भूख हो उससे थोड़ा कम भोजन करें। अधिक खाने से मोटापा बढ़ता है। आँखों को ठीक रखने के लिए हमें टी.वी. कम से कम तीन गज की दूरी से देखना चाहिए। पढ़ते समय कमरे में रोशनी ठीक होनी चाहिए। आँखों की नियमित जाँच करनी चाहिए। बच्चों को जंक फूड न देकर संतुलित आहार देना चाहिए। किसी ने ठीक ही कहा है–

"पहला सुख निरोगी काया"

खेलकूद समारोह - 2023

डाक पंजी. क्र.: **S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023**
प्रेषण डाकघर–रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि– **5,6,7,8**

34 वॉ क्षेत्रीय खेलकूद समारोह - 2023

मुद्रकः प्रिन्टको प्रिन्टर्स–**22**, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ– **226020**, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।
प्रकाशन तिथि : **01.11.2023**